12519

।। श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ।।

।। श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ।।

❀ श्रीमत्यैचन्द्रकलायै नमः श्रीमत्यै चारुशीलायै नमः ❀

❀ सर्वेश्वर्य्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

पुनः भण्डा-फोड़ में

सर्वेश्वरी श्री

"चन्द्रकला वैभव दिग्दर्शन"

लेखक व प्रकाशक :—

चित्रकूटी श्रीजनकदुलारीशरण (वीर वैष्णव)

सियाराम किला, अयोध्या।

मी सम्वत् २०४०

(१००० प्रति)

मुद्रक—

प्रिंटिग प्रेस, शास्त्री नगर, श्रीअयोध्याजी।

12519

॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

❀ श्रीमत्यैचन्द्रकलायै नमः श्रीमत्यै चारुशीलायै नमः ❀

❀ सर्वेश्वर्य्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

पुनः भण्डा-फोड़ में

सर्वेश्वरी श्री

"चन्द्रकला वैभव दिग्दर्शन"

वाल्मीकि शोध संस्थान

लेखक व प्रकाशक :—

चित्रकूटी श्रीजनकदुलारीशरण (वीर वैष्णव)

सियाराम किला, अयोध्या।

विवाह-पंचमी सम्वत् २०४०

(१००० प्रति)

मुद्रक—

मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्री नगर, श्रीअयोध्याजी।

अनुक्रमणिका :—

१. धन्यवाद ।

२. गुरु चेले के दुष्कर्मों का पुनः भण्डा-फोड़ ।

३. श्रीचन्द्रकला तत्त्व का संक्षिप्त परिचय ।

४, निमिवंश में प्राक्ट्य ।

५. श्रीमज्जनकराजकिशोरीजी की वाम पार्श्व-वर्तिनी श्रीचन्द्रकलाजी ।

६. सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी और महामहिम श्रीभरत लाल जी की अभिन्नता ।

७. श्रीचन्द्रकलाजी के सर्वकला विशारदत्व में प्रधान वीणा वादन ।

८. परिशिष्ट भाग ।

12419

धन्यवाद !

मधुकरिया जानकी शरण (अयोध्या) उपद्रवी व्यक्ति है जो आज वर्षों से रामानन्दीय वैष्णव रसिक समाज में अकारण विद्वेष फैलाता रहा है और लोगों को भ्रान्त करने का प्रयास करता आया है। श्रीमिथिलेश राजनन्दिनी श्री-जानकीजू की अभिन्न प्रियतमा सखी (सर्वेश्वरी) श्री-चन्द्रकलाजू के प्रति सर्वथा निराधार ढंग से अश्लील शब्दों का व्यवहार कर उभयपक्ष श्रीचन्द्रकला और चारुशीलानु-यायिओं का हृदय दुखाता रहा है। वर्षों से इसने इस घृणित कार्य का व्यापार ही उठा रक्खा है। इधर कुछ वर्षों से मधुकरिया का चेला रामटहल शरण (प्रबन्धक, श्रीलक्ष्मण मन्दिर, जनकपुर धाम) भी इसके इस व्यापार में साझेदार बन बैठा है। इस तरह गुरू-चेला दोनों महानु-भावों ने व्यापार में बृद्धि लाकर "पापाय पर पीड़नम्" सिद्धान्त अपनाकर अधिकाधिक समाज का हृदय दुखाया है। बहुत उपेक्षा और प्रतीक्षा के बाद आज से बीस वर्ष पहले इस पागल के उन्मत्त प्रलापों का उत्तर "मधुकरिया के सूचना पत्रों का उत्तर" नाम की पुस्तक के द्वारा दिया गया था। पुनः बहुत उपेक्षा के बाद इन पागलों के सम्बन्ध

में कुछ कहने की आवश्यकता प्रतीत हुई जो "गुरु चेले के दुष्कर्मों के पुनः भण्डाफोड़ में चन्द्रकला वैभव दिग्दर्शन" नाम की पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत है। इसमें श्रीचन्द्रकला तत्त्व पर यत्किंचित प्रकाश डाला गया है।

यह उपासना सम्बन्धी विषय है। एतद् सम्बन्धी सहायता उपासना देश की दिशा में ही समझी जायगी।

इस पुस्तिका के मुद्रण-व्यय की व्यवस्था में सर्वश्री महान्त रामशरण दासजी महाराज (श्रीजानकी मन्दिर, जनकपुर धाम), महान्त श्री रामप्रकाशदास जी (रतन सागर), दोनों श्रीराम दुलारी शरण जी (विहार कुण्ड, अग्निकुण्ड), पं० श्री अवध किशोर दास जी महाराज (रामानन्द आश्रम), पं० श्रीराम कृपालु श० जी (अग्नि-कुण्ड), श्री अवध कुमार दासजी (संकट-मोचन, जनकपुर धाम)। श्री सिया मोहनी शरणजी (अधिकारी, लक्ष्मण किला श्रीअयोध्या), कौशलजी, गिन्नी बाई, बाबा रामसेवकदासजी, पं० रामप्रिया श० जी आदि (किला), भैय्याजी (श्री रसमोद कुन्ज), श्री वैदेही वल्लभ श० जी (हनुमान बाग), श्री राम नारायण श० जी (किला) आदि का उत्साह सराहनीय रहा तदर्थ समाज की ओर से ये सब विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

जिन प्रेमी भाई-बहन, संत-महान्तों को इन सबों ने इस पुण्य कार्य में आर्थिक सहयोग के लिये प्रेरित किया है वे सबके सब अधिकाधिक धन्यवाद के पात्र हैं। श्री वैदेही बलल्भ शरणजी (हनुमान बाग) का सहयोगविशेष स्मरणीय रहेगा।

अतएव, शृङ्गार रस की अधिष्ठात्री देवी सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी के चरणों में अधिक श्रद्धा-भक्ति रखने वाले इन महानुभावों के चरणों में शतशः नमन है।

रसिकों का अनुचर:—जनक दुलारी शरण।

स्मरणार्थ प्रकाशन-व्यय में गण्यमान्य गुरुजन आर्थिक सहयोगियों के कुछ नाम :—

स्वामी श्रीसीताराम श० जी महाराज		(लक्ष्मण किला,	अयोध्या	१०१)
,, श्री राम सूरत श० जी	,,	सद्गुरु सदन,	,,	११५)
,, श्री वैदेही रमण श० जी	,,	(हनुमतनिवास)	,,	१०५)
,, श्री हरिराम श० जी शास्त्री	,,	(हनुमत सदन)	,,	१०१)
,, श्री वेदान्ती हरिनामदासजी	,,	(जानकी घाट)	,,	१५१)
पुजारी ,, घनश्यामदास जी	,,	,,	,,	१०१)
महान्त ,, कौशल किशोरदासजी	,,	(बड़े भक्तमाल)	,,	१०१)
चित्रकूटी परमहंसजी ,,	,,		,,	१०१)
स्वामी श्रीरामहर्षणदासजी ,,	,,	(हर्षण कुञ्ज	,,	५१)

महान्त श्री रामअभिलाष श० जी	,,	(सद्गुरु कुटी)	;, १०१)
,, श्री सियाछबीली श० जी, भैय्याजी	,,	(रसमोद कुञ्ज	,, १११)
श्री सियामोहिनीश० जी, अधिकारी,		(लक्ष्मण किला)	,, २०१)
श्री कौशलजी	,,		,, १०१)
श्री गिन्नी बाई	,,		,, १०१)
बाबा राम सेवकदासजी	,,		,, ५१)
पं० श्रीरामप्रियाशरण जी	,,		,, ५१)
जानकी सहचरी, बभनगामा, गोलाघाट			,, १०५)
परमहंस श्री सीतारमणदासजी, हनुमान बाग			,, १०१)
पुजारी श्री राम प्रिया दासजी	,,		,, ५१)
महान्त श्री जानकी शरणजी		(बधाई भवन,)	,, ५१)
,, ,, सिया रघुनाथ श०जी		(जानकी रमण कुञ्ज)	,, ५१)
श्री प्रियाप्रीतम श० जी,		(हनुमान बाग)	,, ५१)
श्री रामलषण श० जी	,,		,, ५१)
महान्त श्रीरामजानकी श०जी महाराज		(ऋणमोचनघाट)	,, ५१)
,, श्री वैदेही श० जी	,,	(हनुमान टेकरी)	,, ५१)
,, श्री राम विहारी श० जी		(मिथिला कुंज,)	,, ५१)

,, श्री राम शरणदासजी महाराज, श्रीजानकी मंदिर,

जनकरपुर धाम १५१)

,, श्री राम प्रकाश दासजी ,, (रतनसागर, जनकपुरधाम) १५१)

,, ,, राम दुलारी श० जी ,, (विहारकुण्ड, ,, १०१)

पं० श्री अवधकिशोरदासजी महाराज, रामानन्द आश्रम,			
	जनकपुर धाम		७५)
पं० श्री रामदुलारी श० जी	,, (अग्निकुण्ड,,	,,	७५)
,, श्री राम कृपालु श० जी	,, ,, ,,	,,	५१)
श्री अवध कुमार दासजी महाराज	(संकट मोचन,	,,	५१)
रानी रुकमिणी		,,	७५)
श्री सिया राघो श० जी	(अग्नि कुण्ड)	,,	५१)
श्री राम स्वरूपदास जी	(शृङ्गार कुंज)	,,	५१)

अन्यान्य सहयोगी।

❀ श्रीचन्द्रकलाष्टकम् ❀

वन्दे चन्द्रकलां देवीं वीणा वादन तत्पराम् ।
रास वेश्मनि भावज्ञां जानकी प्रेम विह्वलाम् ॥१॥
सौशिल्यादि गुणैर्युक्तां वात्सल्य रस भूषिताम् ।
दयार्द्रचित्तां सततं प्रणतार्ति विनाशिनीम् ॥२॥
सुन्दरीं नृत्य हास्यास्यां तयोः हास्यं वितन्वतीम् ।
भेदज्ञां हाव भावानां रसानां रस रूपिणीम् ॥३॥
मां प्राप्य चत्वं देवि राघवं राघव प्रियाम् ।
तवैव कृपया जाता श्याम-श्यामाहि भावना ॥४॥
रसाचार्योपदेशेन यत्किञ्चित्सप्रकाशते ।
सम्यक् न बुद्धयते भद्रे त्वदीयं रूपमद्भुतम् ॥५॥
कृपा कारूण्य भावज्ञे प्राप्नुयामिष्ट भावनाम् ।
तवैव कृपया रामे दुःख हानिर्भविष्यति ॥६॥
नमो वाद्य प्रवीणायै चन्द्रकान्त्यै नमो नमः ।
नमो सीता प्रहर्षिण्यै विलासिन्यै नमो नमः ॥७॥
नमस्ते सर्व भावज्ञै चन्द्रायै च नमो नमः ।
नमो विद्या स्वरुपिण्यै कृपा रुपिणिते नमः ॥८॥
चन्द्रकलाष्टकं पुण्यं नारदेन प्रभाषितम् ।
यः पठेत्सततं भक्त्या तस्य भावोहि सिद्धयति ॥९॥
शठाय पर शिष्याय दाम्भिकाय हितात्मने ।
नदातव्यंमिदं स्तोत्रं भावसिद्धिर्हि दुर्लभा ॥१०॥

(श्रीनारद पंचरात्रे श्री नारदोक्तं श्री चन्द्रकलाष्टकम्)

गुरु चेले के दुष्कर्मोंका पुन: अण्डा फोड़।

(गुरु, मधुकरिया जानकीशरण, चारुशीलाबाग, अयोध्या। चेला रामटहलशरण, प्रबन्धक, लक्ष्मण मंदिर, जनकपुर धाम)

अत्यन्त खेद के साथ पुन: लेखनी उठाने के लिये विबश होना पड़ा है; क्योंकि जो 'रसचर्चा' (रसो वै स: । रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति ।) शास्त्रों पुराणों तथा रसिकाचार्योंकी वाणियोंमें गुम्फित है और जिसके लिये "गोपनीयं गोपनीयं-गोपनीयं सुयत्नत:' बार-बार कहा गया है। जो अधिकारी विशेष का ही विषयहै; उसको ये दोनों महापुरुष 'गुरु-चेला' जानकी शरण और रामटहल शरण आज वर्षों से कभी पन्नों पर कभी पुस्तिकाकार मुद्रित प्रकाशित कर कोर्ट कचहरी आफिस दूकान होटल तथा सार्वजनिक मार्गों पर फेंकते रहे हैं। परिणामत: इन पन्नों और पुस्तिकाओं का उपयोग चाय के पात्रोंके नीचे रक्खा जाना, दूकानों में इन पन्नों में सामान बांधकर बेचा जाना तथा मार्गों में जूतों के नीचे रौंदा जाना आदि होता

रहा है और गुरु चेला यही अपनी बड़ी उपलब्धि भी मानते रहे हैं। पुरानी कहावत है "लै एक पापी डूबता है नाव को मँझधार में।" वर्षों की उपेक्षा के बाद आज मैंने आप सबों को कुछ सुनाने-समझाने के लिये पुनः लेखनी उठायी है। मधुकरिया जानकीशरण आज तीस चालिस वर्षोंसे श्रीअयोध्याजी एवं श्रीजनकपुर धामके श्रीरामानन्दीय रसिक समाजमें विद्वेष फैलाता रहा है और शान्तिभंग करता आरहा है। समाज की उपेक्षा और उदारता के कारण ही यह सामाजिक और राजकीय दण्ड से बचता रहा है। कारण, आज से बीस वर्ष पहले इसने श्रीअयोध्याजी से 'सूचना पत्रों का समूह' नाम की एक खण्डन-मण्डन की पुस्तक प्रकाशित करवायी। जो इसके पन्द्रह-बीस वर्षों के परचों का संकलन था। तीस-चालिस वर्षों का इसका यही अनवरत और अनर्गल प्रयास रहा है कि भगवान श्रीसीतारामजी की अन्तःपुर लीला की परतर शक्ति (श्रृँगार रस की अधिष्ठात्री देवी) जो श्री-चन्द्रकला नाम की श्रीमज्जनकराज किशोरीजू की सर्व प्रधाना सखी हैं इनका 'श्रीचन्द्रकला नाम' ब्रह्माण्ड के साहित्य से बहिर्भूत कर दें। इसके लिये इसने संस्कृत और भाषा के रसग्रन्थ श्रीअग्रस्वामीजी, श्रीमधुराचार्य, हरियाचार्य, श्रीरसिकअलीजी प्रभृत रसिकाचार्यों की वाणियोंको विकृत कर(पाठ भेद करके) प्रकाशित करवाया है। परन्तु,ऐसे अन-

र्गल और जघन्य अपराध मूलक कार्य में मधुकरिया 'गुरु-चेले' का एक जन्म क्या सौ जन्मों का असद प्रयास भी असफल ही रहेगा। 'सूचना पत्रों का समूह' जब मधुकरिया ने प्रकाशित करवाया तो इस सर्वथा अपराध मूलक पुस्तिका के समर्थन में इसने श्रीअयोध्याजी के कतिपय संत महान्तों के जाल हस्ताक्षर कर दिये। पुस्तक देखने पर उन सन्त-महान्तों को अपने जाल हस्ताक्षर पर अत्यन्त क्षोभ हुआ। पुनः उन सबों ने अपने सही हस्ताक्षर कर पुस्तक और लेखक की निन्दा की जो मूलप्रति अभी भी सुरक्षित है और जिससे मधुकरिया जानकीशरण के विरुद्ध उस समय भी मुकदमा बनता था और अब भी बनता है। फिर जब मैंने 'सूचना पत्रों के समूह का उत्तर' लिखा तो पुस्तक के प्रारम्भ में ही कालनेमि की काली करतूत का दिग्दर्शन है। अभी भी उत्तर वाली इस पुस्तक की प्रति कहीं सुरक्षित है तो पाठक को सब बातें यथावत समझ में आसकती हैं। इस उत्तर पुस्तिका की इतनी प्रतियाँ उपलब्ध नहीं हैं कि अधिक संख्या में लोगों को दी जा सकें। श्रीचन्द्रकला तत्त्व के प्रतिपादन में अत्यन्त प्राचीन श्रीलोमश संहिता तो है ही। एक श्री चन्द्रकलापरतत्त्व प्रकाशिका पं० श्री राम-दुलारीशरण जी अग्नि-कुण्ड श्री जनकपुरधाम की लिखी हुई है। फिर श्री चन्द्रकला तत्त्व दर्शन पं० श्याम वल्लभाशरण-

जी, श्री अयोध्याजी का लिखा है। श्रीचन्द्रकला तत्त्व के प्रमाणों की यत्किञ्चित चर्चा मैं इसमें भी आगे करूँगा। खैर, उत्तर पुस्तिका से मधुकरियाके मुंहपर उस समय ऐसा चोट लगी कि सूजन आ गया और वर्षों तक वह दर्द शान्त होने का उपचार ही करता रहा। उसकी बोलती ही बन्द हो गई थी।

समय ही ऐसा होता है कि किसी घाव को थोड़ा भर देता है। इधर मधुकरिया का एक चेला रामटहल शरण नाम कर के थोड़ा पढ़ लिख गया। श्रीजनकपुरधाम का रसिक समाज आखिर साधु-समाज ही ठहरा। पढ़ा-लिखा समझ कर सबों ने मिलजुल कर आज से कुछ वर्ष पहले श्रीलक्ष्मण मन्दिर,जनकपुर धाम का इसे प्रबन्धक बना दिया। यह स्थान गुठ्ठी संस्थान के अधीन है। जिसका प्रबन्धक गुठ्ठी संस्थान के अधिकारी द्वारा कभी भी निष्काशित किया जा सकता है। अब तो वही हुआ जो सर्प को दूध पिलाने से होता है, 'यथा होहि अहि दूध पियाये'। 'जेहि ते नीच बड़ाई पावा। सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा।' अब तो गुरू-चेला श्री लक्ष्मण मन्दिर को अपने दुष्प्रचार का केन्द्र बनाकर रहने लगे। गुरू मधुकरिया श्रीअयोध्याजी छोड़कर यहीं श्री जनकपुर धाम झूठे पण्डित का गुरू अपने को जान दम्भ में फूल यहीं रहने लगा। आज आठ-दस वर्षों से

रसिक-समाज में विद्वेष फैलाता रहा है। कलह का विष बीज वपन कर शान्ति भंग कर वातावरण को विषाक्त बनाता रहा है। परिणामतः गुरू चेला आज समाज से वहिष्कृत हैं। परन्तु, निर्लज्ज व्यक्ति को निर्लज्जता की एक मस्ती होती है जो शराबी में देखी ही जाती है। नशा में चूर उसकी दुनियाँ अलग होती है। अपनी डफली अपना गीत गाये चलता है। कोई सुने समझे चाहे नहीं। 'गुरू-शिष अंध-बधिर कर लेखा। एक न सुने एक नहि देखा।" "वातुल भूत बिबश मत वारे। ते नहि बोलहि वचन विचारे'॥

मधुकरिया गुरू चेले का उद्घोष है कि हमने चन्द्रकला की मूर्ति को श्री कनक भवन (अयोध्याजी) से उठाकर फेंकवा दिया। पाठक जरा इस पर विचार करें कि सिवा विधर्मी (मुसलमान आदि) को छोड़कर हिन्दू मात्र क्या ऐसा बोलने का साहस कर सकता है ? जबकि यथार्थ स्थिति यह है कि कनक भवन के ऊपर जो अष्ट कुँजों के दर्शन हैं, उनमें श्री चारुशीलादि अन्य सखियों के तो पृथक्-पृथक् कुंज हैं, परन्तु, स्वामिनी श्री मिथिलेशराजनन्दिनीजू से अभिन्न होने के कारण सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलाजी का शयन पर्यंक युगल सरकार के शयन पर्यंक के साथ ही एक कुंज में है जो दर्शक दर्शन भी करते हैं तथा जिसका उल्लेख १६४१ ई० के कनक भवन द्वारा प्रकाशित 'शयन कुंज की कुंजी' में

में है। फिर पाठक हो विचार करें कि सर्वाधिक प्रधानता किन में हुई ? यही गुरू-चेले महानुभाव के बे सिर-पैर की बात है। रामटहलशरण गुरु-चेले ने नेपाल नरेश को लिखा कि यदि चन्द्रकला की मूर्ति नव निर्मित विवाह-मण्डप श्री-(जनकपुर धाम) में स्थापित होती है तो अनर्थ हो जायगा। मण्डप अस्पृश्य हो जायगा। कैसे कोई हिन्दू वहाँ पैर रक्खेगा? पाठक जरा सोचें कि इस तरह के कल्पनातीत पापों का क्या प्रायश्चित्त भी सम्भव है ? इतना ही नहीं, राजकीय साहाय्य से नव-निर्मित विवाह मण्डप, श्रीजनकपुर धाम (जिसमें श्री जानकी मंदिर के संस्थापक प्राचीन संत श्री सूरकिशोर-जी महाराज के सिद्धान्तानुसार इनके वंशानुगत भूतपूर्व महान्त बाबा नवलकिशोर दासजी के शुभ संकल्प को वर्त-मान महान्त श्री रामशरणदासजी के द्वारा साकार रूप मिला है तथा जिसमें इन्हीं की भावना के मुताबिक देवी-देवता प्रतिष्ठित किये गये हैं) में श्री चन्द्रकला मूर्ति की अवस्थिति के कारण मण्डप को ये गुरु-चेला खुलेआम लोगों के बीच वेश्यालय उद्घोषित करने में भी नहीं हिचकते हैं, जबकि युगल सरकार भगवान श्रीसीतारामजी के सहित श्री चारुशीलाजी भी मण्डप में बिराजमान हैं। फिर यदि ये किन्हीं के द्वारा पागल कुत्ते कहे जाते हैं तो दुःख मानते और प्रचार करते हैं कि हम पागल कुत्ते बनाये जाते हैं।

पाठक ही विचार करें कि ऐसी पशु-भाषा का प्रयोग सिवा पागल कुत्तों को छोड़कर पागल व्यक्तियों के द्वारा भी संभव है क्या ? गोस्वामीजी ने ऐसे ही अक्षम्य अपराधी के लिये लिखा है कि "हरिहर निन्दा सुनहिं जो काना। होइ पाप गो घात समाना ।।" "काटिय तासु जीभ जो बसाई ।"...

कानून की दृष्टि से धर्म के अलावा जनता, श्री ५ नेपाल नरेश और नेपाल के शासन के लिये यह अत्यधिक अवहेलना अपमान के साथ चुनौती है। इसलिये, जनता और शासन को इसका विचार करना चाहिये कि ये कितने दण्डनीय अपराधी हैं। गुठी-संस्थान के अध्यक्ष को भी चाहिए कि श्री लक्ष्मण–मन्दिर जैसे मर्यादित स्थान से रामटहलशरण जैसे उच्छृङ्खल स्वभाव अकारण समाज में विद्वेष फैलाने वाले प्रचण्ड पागल (वैर अकारण सब काहूसों। जो कर हित अनहित ताहू सों ।।) को निष्कासित कर किसी निर्वैर समझदार व्यक्ति को स्थान का प्रबन्धक बनावें। कारण, "जो नहिं दण्ड करौं खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा ।।" श्री जनकपुरधाम के मूर्द्धन्य विद्वान इनकी इन दुःउक्तियों के साक्षी हैं। तो कहना पड़ता है कि—"बरनि न जाहिं अनीति, घोर निशाचर जे करहीं। हिंसा पर अति प्रीति, तिनके पापन कवन मिति ।।" खैर, विवाह मण्डप में श्री चन्द्रकला जी के साथ श्री चारुशीला जी की भी स्थापना

हो गयी जो इन सबों को तो सह्य नहीं होगी। परन्तु, इनके होने न होने से क्या होता है ? हमारे तो दोनों समान उपास्य हैं, इसलिए स्थापना हुई है और दोनों के लिये समान मान्यता बनी रहेगी।

ये सब समस्त आस्तिक उपासक समाज के हृदय को व्यर्थ में अपनी दुःउक्तियों से क्षत-विक्षत करते आ रहे हैं और यही अपना पुरुषार्थ मानते हैं। ये समस्त वैष्णव समाज के लिये कलङ्क बन रहे हैं जो चिन्ता का विषय है। शास्त्र–पुराण तथा आचार्य वाणियों के अलावा सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला माहात्म्य के प्रमाण में हम तो वर्तमान लगभग सवा सौ वर्ष के वयोवृद्ध महात्मा श्री १०८ श्री रामसुन्दर शरणजी महाराज (श्री पुजारीजी, विहार कुण्ड, श्री जनक-पुरधाम) को ही साक्षी (मध्यस्थ) मानते हैं जिनकी आचार्या श्री चारुशीलाजी ही हैं और जिनका बार-बार उद्घोष है कि श्री रसिक अलीजी महाराज के जैसे हमारे लिये श्री चन्द्रकला और श्री चारुशीला दोनों ही समान उपास्य हैं। इनको न्यूनाधिक मानने वाले पापी का मुख नहीं देखना चाहिये। श्री पुजारीजी महाराज अभी शय्या-ग्रस्त दर्शन दे रहे हैं। कोई भी इस विषय में अपनी जिज्ञासा का समाधान करा सकता है। हम अब इस विषय में इससे अधिक सरल और सहज प्रमाण क्या उपस्थित कर सकते हैं ?

पाठक ही सोचें कि जो गुरुजन सन्तों को ही नहीं माने और निराधार व्यर्थ मिथ्याचार पापाचार से सबों का हृदय दुखावे तथा कलह का बिष-बीज वपन कर समाज में अशान्ति फैलाता रहे, वातावरण को विषाक्त बनाता रहे तो ऐसे पागलों से भगवान ही रक्षा करें। और उपाय ही क्या हो सकता है? हम उन्हीं सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि इन पागलों को सद्बुद्धि दें ताकि अकारण शान्ति भंग की स्थिति न उत्पन्न हो।

शङ्कर-ब्रह्मा-नारदादि अर्चिता वन्दिता श्री मज्जनक-राज किशोरी जू की अपरा मूर्त्ति श्री चन्द्रकलाजी के प्रति अश्लील शब्दों का असद प्रलाप सत्य और न्याय से सर्वथा दूर निराधार चर्चा (श्री चन्द्रकलाजी दासी हैं, सखी नहीं हैं, गाने वाली हैं, निमि वंशोदभवा नहीं हैं, गान्धर्वी हैं आदि-आदि उन्मत्त प्रलाप) ही गुरू चेले ने अपना पाण्डित्य माना है। गुरू मधुकरिया जानकी शरण लिखित तथा चेला रामटहल शरण द्वारा प्रकाशित सम्वत् २०३५ के मुद्रित श्री 'हनुमत वैभव' नामक पुस्तक के अन्त में कितना हास्यास्पद–प्रसंग आता है कि लेखक लिखता है कि चन्द्र-कला नाम की कोई कहीं की राजकुमारी हुई है। कहीं और किसी की कन्या हुई है। चन्द्रकला नाम की कोई परिकर नहीं। क्या? इसका उत्तर यह सर्वथा समीचीन

नहीं हो सकता कि कोई जानकी शरण नाम का धोबी-कुम्हार-चर्मकार हो और चेला रामटहल उससे भी निम्न जाति का श्वपच हो तो ये दोनों गुरु-चेला महानुभाव अपने ही न्याय से चर्मकार और श्वपच क्यों न मान लिये जाँय। यह बिल्कुल स्थूल बुद्धि की बात है कि एक नाम के अनेक व्यक्ति होते हैं। यह इन दोनों गुरु-चेले की बुद्धि का दिवालियापन है। रस विशेष के सम्बन्ध में शास्त्र-पुराणों के प्रमाणों के अलावा रसानुभवी रसिकाचार्यों की रस सिद्ध वाणियाँ ही विशेष प्रमाण हैं। संहिता पुराणादि के प्रमाणों के अलावा-बाप-दादे-परदादे रसिकाचार्यों की की रससिद्ध वाणियों को ही कोई मान ले तो स्थिति किसी की भी समझ में आजाय। विशेष आयास की कोई आवश्यकता ही नहीं। नहीं मानने पर बदमाशी का कोई जबाब नहीं होता। ऐसी स्थिति में तो यही कहना पड़ता है कि—
"ढोल गवाँर शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥"
तब उसी हठी की सी बात जो कहता है "मैं जीत गया" कैसे? तो कहा हजार, माना एक नहीं।' शान्त, दास्य, वात्सल्य, सख्य और शृङ्गार रसों में शृङ्गार रस की अधिष्ठात्री देवी श्री चन्द्रकलाजी हैं। श्री चन्द्रकला तत्त्व को जानने के लिये :—

(१) श्री लोमश संहिता (२) श्री चन्द्रकला तत्त्व-दर्शन

(३) श्री चन्द्रकला परतत्व प्रकाशिका (४) श्री जानकी चरितामृत आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं। मैं वेद, संहिता, पुराण तथा रसिकाचार्यों की वाणियों के माध्यम से श्रीचन्द्रकला तत्व का संक्षिप्त रूप में दिग्दर्शन कराने का प्रयास करता हूँ। आधार ग्रन्थ यहाँ श्री जनकपुरधाम, श्रीरामानन्द आश्रम, श्री युगल-विनोद कुंज (विहार कुण्ड) श्री अग्नि कुण्ड आदि स्थलों में तथा विशेषकर श्रीअयोध्याजी में हैं। सन्देह होने पर इन सब स्थलों से मूल ग्रन्थ देखकर भ्रमनिवारण-सुगमता से किया जा सकता है।

श्री चन्द्रकला तत्व का संक्षिप्त परिचयः-

वेद में:—

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जात वेदो ममावह ॥१॥

(ऋग्वेद श्रीसूक्तम्) ऋचा-प्रथम

अर्थ—(जात वेदः) ये स्वयं सिद्ध ज्ञानवान अग्निदेव आप-(हिरण्यवर्णां) स्वर्ण के समान गौर वर्ण वाली (हरिणीं)-श्री हरि भगवान श्री राम के आश्रय में रहने वाली अथवा शरणागतों को श्री हरि (श्री राम) का आश्रय दिलाने वाली (स्वर्ण रजतस्रजाम्) रत्न जटित अलङ्कारों की धारण करने वाली (हिरणमयीं) स्वर्णादिक प्रचुर धन से सम्पन्न अथवा

सोने की तरह सुप्रकाशित (लक्ष्मीं) साक्षात् लक्ष्मी स्वरूपा (चन्द्रां) श्री चन्द्रकला जी को (मम-ग्रावह) मेरे लिये ग्रावाहन करें ॥१॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये-ग्रलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

(ऋग्वेद श्रीसूक्तम्) ऋचापंचमी—

(ग्रहं) मैं शरणागत जन (चन्द्रां) श्री चन्द्रकला स्वरूप धारिणी (लोके) समस्त भुवनों में [यशसा] ग्रपने सुयश से भगवत कृपा के प्रताप से (ज्वलन्तीं) अत्यन्त प्रकाशित होने वाली (देवजुष्टाम्) श्री सीताराम जी के साथ बिराजमान अथवा देवाधिदेवों के द्वारा सुसेवित (उदाराम्) आश्रितों को भगवत प्रेमधन—सेवा कैंकर्य्य रूपी दिव्य धन प्रदान करने में ग्रत्यन्त उदार सकाम भक्तों को लोक परलोक चाहना से भी ग्रधिक सुखसम्पत्ति प्रदान करने वाली (पद्मनेमिं) कमल के मध्य निवास करने वाली कमलनयनी करारविन्दवाली (ताम्) उन उपर्युक्त विशेषण विशिष्ट श्री चन्द्रकला देवी [श्रियं] श्री-जी की ग्रभिन्न स्वरूपा को [शरणं प्रपद्ये] ग्रपनी परम रक्षिका के रूप में मैं वरण करता हूँ [मेंग्रलक्ष्मीं] मेरी ग्रविद्या रूपी लौकिक निर्धनता को [नश्यतां] नष्ट करदें। (ग्रहं त्वां वृणे) मैं ग्रापका वरण करता हूँ।

श्री नारद-पंचरात्रान्तर्गत श्रीनारदोक्त चन्द्रकलाष्टक में श्रीचन्द्रकलाजी को श्रीचन्द्राजी भी कहा गया है।

यथाः—नमस्ते सर्व भावज्ञै चन्द्रायै च नमो नमः।

नमो विद्या स्वरूपिण्यै कृपारूपिणि ते नमः ॥८॥

अर्थात् श्रीचन्द्रकलाजी का एक नाम श्रीचन्द्राजी भी है।

[देखिये, इसी ग्रन्थ के प्रारम्भ में इस 'चन्द्रकलाष्टक' को]

पुनश्च "नामैक देश ग्रहणे अशेष नाम ग्रहणम्" न्याय से भी चन्द्रां से चन्द्रकलां सिद्ध है।

❀ श्री याज्ञवल्क्य संहिता :—

❀ श्लोक ❀

कैलाश शिखरे रम्ये समासीना शिवैकदा।
विरत ध्यान योगस्य शिवस्य मुख पङ्कजात् ॥
सर्वेश्वरी ! चन्द्रकले ! प्रसीदेति शुभं वचः।
समाश्रुत्य मुहुर्देवी विस्मयं परमंगता ॥

[श्री याज्ञवल्क्य संहिता, ३६।४, ५।]

अर्थः—एक बार परम रमणीक कैलाश-शिखर स्थित ध्यान योग से उपराम होने पर सहसा शंकर भगवान के मुखारबिन्द से "हे सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकले जू ! आप

मुझपर प्रसन्न हों" ऐसा शुभ-वचन सुनकर देवी श्री पार्वती जी विस्मय को प्राप्त हुईं तात्पर्य सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू के लिये जिज्ञासा हुई ।

श्रीमन्महासुयज्ञ संहिता :—

श्री नारद पाञ्चरात्रान्तर्गत श्री मन्महासुयज्ञ संहिता में हमारे समाज में प्रचलित श्री रामार्चन पद्धति से भिन्न श्रीसीतारामार्चन पद्धति लिखी है ।

वहाँ की श्रीसीतारामार्चन पद्धति की कथा में प्रसङ्ग आया है कि श्रीब्रह्माजी ने सविध श्रीसीतारामार्चा की । पूजा मंडल में ही श्रीजानकीवल्लभ लाल जू सपरिवार प्रगट हो गये । वह परिवार था अन्तःपुर श्री कनक महल का । श्रीब्रह्माजी क्या देखते हैं कि—

"रामवामे स्थिता नित्या श्रीसीता अवधेश्वरी ।
पार्श्वयो धरणी नीले समासीने शुभासने ॥
अष्ट दिक्षु च सेवन्ती शक्तयः परितो हरेः ।
विमलोत्कार्षणी ज्ञाना श्री मच्चन्द्रकला वरा ॥
प्रह्वा सत्या तथेशाना क्रिया योगा शुभानना ।
ईशावास्या महादेवी चारुशीला यशस्विनी ॥
श्रद्धा मेधा स्मृति र्वन्या कमला च सर्वगा वरा ।
श्रुति स्मृति धृति प्रज्ञा धारणा शान्तिरेव च ॥

ललिता चन्द्रावली श्रीवृद्धि बुद्धिर्मनोषिणी ।
दास्यश्चेताः श्रियः प्रोक्ता सर्व कैङ्कर्य कारिकाः ॥
गृहीत्वा चामरान् दिव्यान् सुधाकर सम प्रभान् ।
सर्व लक्षण सम्पन्ना सेवन्ती रघुनन्दनम् ॥
अन्तःपुर निवासिन्यः सर्वाभरण भूषिताः ।
पद्मगन्धान्विताः सर्वाः कोटि वैश्वानरप्रभा ॥

अर्थात् श्री जानकीरमण लाल जू के वामभाग में आपकी नित्य सङ्गिनी श्री अवध साम्राज्ञी श्री सीता जू हैं। दोनों ओर श्री धरणी देवी तथा श्री नीला देवी शुभासनों पर विराजमान हैं।

मनहरण श्रीजानकीरमण लाल जू के चारों ओर सेवा तत्पर श्रीप्रिया जू की दिव्य शक्तियां हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं :—

सर्वश्री विमला जी, उत्कर्षिणी जी, परमोत्तमा (वरा) श्रीमती चन्द्रकलाजी (इस प्रसंग में "वरा" 'श्रीमत्' दोनों विशेषण श्रीमती चन्द्रकला जी का सर्वप्रधानत्व सूचित करते हैं) प्रह्वाजी, सत्याजी, ईशानाजी, सुमुखी क्रिया जी, योगा जी, ईशावास्याजी, यशस्विनी चारुशीला जी, श्रद्धाजी, मेधाजी, कृतिजी, वन्याजी, कमलाजी, सर्वंगा

जी, वराजी, श्रुतिजी, स्मृतिजी, धृतिजी, प्रज्ञाजी, धारणाजी, शान्तिजी, ललिताजी, चन्द्रावलीजी, श्रीवृद्धिजी, बुद्धिजी और मनीषिणी जी। सर्व कैंकर्य कुशला इतनी सेविकायें श्रीराघवप्राणवल्लभा जू की कही गई हैं।

चन्द्रमा की शुभ्रता को छीनने वाले दिव्य चँवर लिये श्री रघुलाल जू की सेवा कर रही हैं। सभी सुलक्षणा श्री कनक भवन के अन्तःपुर की निवासिनी हैं। सर्वांग मणिजटित स्वर्ण भूषणों से समालङ्कृत हैं। कोटि-कोटि अग्नि के समान तेजस्विनी एवं अंग प्रत्यंगों में कमलवत् सुगन्ध वहन कर रही हैं।

(लुप्तप्राय प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के शोध कार्य संलग्न विद्वान् सन्त श्री गोपालाचार्य जीं महाराज, श्री अयोध्या अशर्फी भवन निवासी के सौजन्य से प्राप्त ताड़ पत्रों पर अङ्कित प्राचीन लिपि से उद्धृत अंश)

श्रीमत्कौण्डिन्य संहिता :—

श्रीउमामहेश्वर संवाद। प्रसङ्ग-भगवान् शशिशेखर के मस्तक में चन्द्रकला धारण करने का कारण।

श्री महादेव्युवाच :—

भगवन्! परमं गुह्यं पृच्छामि सुरसत्तम!।
अकर्त्तव्यमपि प्रश्नं क्षन्तुमर्हसि मे प्रभो॥

कैलासे ध्यानमग्नोऽसि सर्वेशोऽपि जगन्मय ।
उदासीन इवैश्वर्यं कृतं रुद्राक्ष धारणम् ।।
कपाल भस्म चर्मास्थि गर्हितं नागभूषणम् ।
गङ्गां स्वशिरसि देव ! तथा चन्द्रकलां कथम् ।।
वहते सर्वदेवेश ! भगवन् केन हेतुना ?
मयि प्रीत्या समाचक्ष्व संशयो वर्तते भृशम् ।।

श्री महादेव उवाच :—.........

अतः परं प्रवक्ष्यामि हेतुं चन्द्रकलां प्रिये ।
ममेष्ट देवो श्रीरामो विभूतिद्वय नायकः ।।
सर्वेश्वरेश्वर स्साक्षात्परात्परतमः प्रभु ।
तस्य शक्तिर्महाभागा सर्वलोक महेश्वरी ।।
साक्षात्सीता महालक्ष्मी जगन्माता हिरण्मयी ।
सर्व लक्षण सम्पन्ना यौवनारम्भ विग्रहा ।।
परात्परतमा साक्षाच्छ्रीराम हृदयालया ।
वामे चन्द्रकला नाम्नी जानकी व्यूह विग्रहा ।।
महाभाव स्वरूपा सा सखीनामीश्वरी स्मृता ।
नाना विचित्र रत्नाढ्या नीलोत्पल समद्युतिः ।।
द्वितीयायां शशिकला यथा सूक्ष्मा प्रदृश्यते ।
तथैवास्या महादेव्या मन्दस्मित कलाप्रिये ।।
तस्माच्चन्द्रकला नाम श्री रामेण कृतं स्वयम् ।
ततः स्नेहात्स्वयं सीता व्याजहार शुभं वचः ।।

सखीनां प्रवरे देवि ! श्रीमच्चन्द्रकले शुभे ।।
हृदयान्मे समुद्भूता त्वं मे प्राणाधिक प्रिया ।
विना ते कृपया वत्से ! सर्वेषां प्राणिनां ध्रुवम् ।।
दुर्लभं मम कैङ्कर्यं त्रिषु कालेषु सर्वथा ।
श्री रामोऽपि विलोक्यास्यै मन्दस्मित मुखाम्बुजम् ।।
ताम्वूलं प्रददौ तस्यै सीतानन्द विवर्द्धनः ।।
श्री सीताया सखीनां त्वं मूर्द्धन्या सर्व स्वामिनी ।
सर्वेषां वै मुमूक्षूणां त्वं मत्प्रेमप्रदा भव ।
यः स्मरिष्यति त्वां देवि ! तस्योरसि वसाम्यहम् ।।

श्री शिव उवाच :—

एवं रामप्रसादेन श्रीसीताया वरेण च ।
विनाऽस्याः कृपया देवि ! दुर्लभं रामदर्शनम् ।
तथा सीता महालक्ष्म्या कृपाप्राप्तिः सुदुर्लभा ।।
मया मूर्द्धिन् धृतं देवि ! तस्याः स्मरण हेतवे ।
इयं चन्द्रकला देवि ! किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।।

(श्रीमत्कौण्डिन्य संहिता, पटल–५–अध्याय ३३)

(कल्याण की प्राचीन प्रति में छपे श्रीभूधर सुव्रह्मण्य स्वामी लिखित 'श्रीशिवस्वरूप विवेचन' शीर्षक लेख से साभार उद्धृत ।)

अर्थात् महादेवी श्रीपार्वतीजी भगवान् शंकर जी से पूछती हैं—हे देवाधिदेव भगवन् ! मैं आपसे एक परम गोप्य

रहस्य पूछती हूँ। आप तो अपने कैलाश के निवास स्थान में जगन्मय सर्वेश होकर भी सदा ध्यान मग्न रहते हैं। ऐसे अवसर पर मुझे प्रश्न नहीं करना चाहिये था। अतः ढिठाई के लिये क्षमा करें।

आपका ऐश्वर्य परम वैराग्मय वैभव है। कहां एक ओर तो आप रुद्राक्ष, कपाल, भस्म, चर्म, अस्थि नाग भूषण जैसे अमंगल साज सजे हुये हैं और कहाँ दूसरी ओर परम पावन गंगा जी को मस्तक पर तथा आह्लादवर्धक मांगलीक चन्द्र-कला को ललाट में धारण कर रक्खा है।

हे देवाधिदेव भगवन्! मेरे हृदय में बड़ा संशय हो रहा है। मेरे ऊपर यदि आप प्रसन्न हैं तो कृपया मुझे इसका रहस्य समझाइये।

भगवान् शंकर जी ने उत्तर में पहले श्री गंगा जी को मस्तक पर धारण करने का कारण बताया, जो प्रसंगान्तर होने से यहाँ नहीं लिखा गया है। बाद वाले दूसरे प्रश्न के उत्तर में आप कह रहे हैं।

"इसके पश्चात् हे प्रिये! मैं तुमसे अपने ललाट में श्री-चन्द्रकला धारण करने का कारण कहता हूँ। अनन्त ब्रह्माण्ड समूह श्रीब्रह्मा रचित हैं। ये एकपाद विभूति कहाते हैं। सप्तावरण वाले दिव्य वैकुंठों के समूह त्रिपाद विभूति कहाते हैं। दोनों विभूतियों के सर्वेश्वर स्वामी श्रीरघुनन्दन जू मेरे

इष्ट देवता हैं। आपही परात्परतम ब्रह्म हैं। उन्हीं की आह्लादिनी सारसर्वस्व आद्याशक्ति सर्वलोकों की महान् ईश्वरी स्वयं श्रीसीता महारानी हैं। आप सुवर्ण वर्णी जगज्जननी तथा अनन्त लक्ष्मियों की जननी है। सभी मांगलीक लक्षणों से संयुक्त अभिनव यौवनावस्था सम्पन्ना हैं। श्रीरघुनन्दन जू के हृदय निवासिनी आप परात्परतम विभवा हैं। श्रीजनकेन्द्र राजनन्दिनी जू के सदैव वामपार्श्व वर्तिनी आपही की कायव्यूह स्वरूपा अर्थात् अंगभूता अभिन्ना श्रीचन्द्रकला नाम्नी सखी सर्वेश्वरी हैं, जो आपही के समान प्रेम की सर्वोच्च दशा वाली महाभाव स्वरुपा हैं। नीलमणि की चमक वाले अनेक रत्न विभूषणों से समालंकृत रहती हैं।

हे प्रिये पार्वति ! इन परमादेवी श्रीमती चन्द्रकला जू का मंद हास वाला किंचित दंतावलि विकाश द्वितीया तिथि वाले चन्द्रखंड के समान सूक्ष्म दीख पड़ता है। कुलांगना की संकोचशीला मर्यादा भी तो यही है। आपका इसी से श्री-रघुनन्दन जी ने नामकरण किया श्रीचन्द्रकलाजी, श्रीसिया-स्वामिनी जू भी प्राणप्रियतम जू की रीझ में सम्मिलित हो गईं और स्नेह पूर्वक उनसे शुभ वचन कहने लगीं। हे मंगलस्वरुपे श्रीमती चन्द्रकले देवि ! तुम तो पहले से ही हमारी सखियों की सर्वेश्वरी हो। क्यों न हो ? मेरे हृदयदेश ही से तो प्रगट हुई हो, मेरी तो प्राणोंसे भी बढ़कर प्यारीहो।

मैं तुमपर प्रसन्न होकर अपनी ओर से तुम्हें वरदान देती हूं कि हे वत्से ! तुम्हारी कृपा के बिना सभी प्राणियों के लिये हमारी महल टहल की प्राप्ति तीनों काल में सर्वथा दुर्लभ रहेगी । श्री मैथिली हृदयानन्द वर्द्धन रघुनन्दन जू ने श्री चन्द्रकलाजी के मन्द मुसकान युक्त मुखारविन्द को देखकर पान की वीटिका रीझकर दी और कहा—तुम हमारी प्रिया जू की सभी सखियों की शिरोमणिभूता स्वामिनी रहोगी । सभी मुमूक्षुओं की दिव्य प्रेम प्रदायिका तुम्हीं बनोगी । जो मुमूक्षू तुम्हारा भजन स्मरण करेगा, उसके हृदय में मैं निवास करूँगा । इस प्रकार पूरा प्रसङ्ग सुनाकर भगवान् शङ्करजी श्री पार्वतीजी से कहते हैं कि हे प्रिये ! श्रीमती चन्द्रकलाजी श्री प्रियतम जू के एवं श्री प्रिया जू के वरदान से विवर्द्धित महिमामयी हो गई हैं । इनकी कृपा के बिना श्रीकनकभवन विहारीलालजू के दिव्य दर्शन दुर्लभ हैं तथा अनन्त लक्ष्मी जननी श्री सिया स्वामिनी जू की कृपा प्राप्ति भी अत्यन्त दुर्लभ रहेगी ।

मुझे भी ऐसी महिमामयी सर्वेश्वरी श्रीमती चन्द्रकला जू का नित्य निरन्तर स्मरण होता रहे, इसीलिये अपने मस्तक पर श्रीचन्द्रकला धारण कर रक्खी है ।

यह हुआ मस्तक पर चन्द्रकला धारण करने का रहस्य ! और क्या सुनना चाहतो हो ?

श्री सीता अवधेश्वरी सहस्रनाम :—

सीरध्वज सुता सीता सुनयनोत्सङ्गलालिता ।
विमला-चन्द्रकला सेव्या चारुशीला सुसेविता ॥५०॥

(श्री नारद पाञ्चरात्रान्तर्गतायां श्री महासुयज्ञ संहितायां श्री वशिष्ठ प्रोक्तं श्री सीता अवधेश्वरी सहस्रनाम)

श्री सिद्धेश्वर तन्त्र :—

नवीनेन्दुकला नन्दो नन्दिकेश्वर पूजिता ।
नीरजाक्षा चंचलाक्षी नीरजद्वन्दलोचना ॥

(श्री सिद्धेश्वर तन्त्रे श्री सीता सहस्रनाम)

अर्थः—नित्य निरंतर नवीन भावना से परिपूर्ण आह्लादकारिणी श्री चन्द्रकलाजी के द्वारा तथा नन्दी एवं नन्दिकेश्वर (भगवान् शङ्कर) के द्वारा पूजित प्रीतम के (दर्शनार्थं) चञ्चलाक्षी नील कमल तथा श्वेत कमल के समान-नेत्र वाली श्री मिथिलेश राजनन्दिनी श्री जानकी जी हैं ।

श्री सीताङ्गजा षोड़सयूथेश्वरी स्त्रोत्रम्—

(१) सोमा सौभाग्य शोभा सकल गुण कला पूर्णा चन्द्राननाभा ।
श्री रामानन्दरागा रमण रसमयी सर्वदानन्ददात्री ॥

श्रीसीताकान्तकान्ता प्रियतम परमा प्रेम पूर्णाभिरामा ।
सेव्या सर्वेश्वरी सा सकल युवतिभिः मुख्या चन्द्रकलाख्या ।।१।।

जानक्यांश कला कलाप मधुरा सौन्दर्य सीमा परा,
प्रेष्ठा प्रेष्ठतरा प्रसन्न वदना यूथेश्वरी सौख्यदा ।
भक्ताभीष्टकरा प्रमोदनिलया राम प्रिया प्रेमदा ।
ख्याता चन्द्रकलाभिदा जयति सा सौभाग्य सम्पत्तिदा ।।२।।

'श्री सीतांगजा षोडसयूथेश्वरीस्तोत्र, में सर्वप्रथम सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलाजी की बन्दना की गई है फिर और सबों की तथा स्तोत्र के अन्त में यूथेश्वरी श्री चारुशीलाजी की वन्दना की गई है ।

(श्री मद्रामसखेन्द्र श्री सीता प्रसाद स्वामि विरचितं श्री सीताङ्गजा षोड़सयूथेश्वरी स्तोत्रम्)

श्री लोमश संहिता:--

❀ श्लोक ❀

वन्दे चन्द्रकलां शरच्छशिमुखीं श्यामारबिन्देक्षणाम् ।
भक्तानां भयनाशिनीं करुणया संकल्प सिद्धिप्रदाम् ।।
श्री रामेष्टकरीं स्वयं जनकजा वामे सदा संस्थितां
सर्वाशा परिपूरणीं विजयते देवीं भजे शर्म्मदाम् ।।

(लोमश संहिता अ० २१ श्लोक ५६)

शरच्चन्द्रमा के समान पूर्ण मुख शोभा श्री सम्पन्न

श्याम अरविन्द के समान विकसित राजीवलोचना श्री चन्द्रकलाजी की मैं चरण–वन्दना करता हूं।

भक्तों का भयनाश करने वाली कृपा करके आश्रितों के संकल्पों को सिद्ध करने वाली श्री रामजी का प्रिय करने वाली श्री चन्द्रकलाजू का सर्वदा विजय हो। श्री मज्जनक-राजनन्दिनीजू के वाम भाग में सदा विराजमान कल्याण प्रदायनी सर्व मङ्गल मनोरथों को पूर्ण करने वाली श्रीचन्द्र-कलाजू का मैं भजन करता हूं।

सखी बृन्द ससस्त्रेषु मुख्याः षोड़स कीर्तिताः।
षोड्सेषु पुनश्चाष्टौ यूथेश्वर्य्यः प्रकीर्तिता ॥५०॥

अष्टस्वपिचतस्रस्तु श्रेष्ठाः केलि प्रवर्तिकाः।
तासामपि पुनश्चैका मुख्या यूथेश्वरेश्वरी ॥५१॥

या च चन्द्रकलानाम्नी सर्व विद्या विशारदा—
सुदक्षा सर्व कार्येषु दम्पत्योः रसवर्द्धिका ॥५२॥

चातुर्य्यैश्वर्य्यं सौन्दर्य्यं गुणैः कान्त मनोरमैः।
लीला वैदग्ध्य भावेन सर्वाभ्योह्यति रिच्यते ॥५३॥

यूथेश्वरीणां सर्वासां कामं लोकोत्तरो गुणाः।
तथा प्याज्ञां प्रतीक्षन्ति सर्वाश्चायाः गुणोदयात् ॥५४॥

मैथिली प्रीति पात्रत्वात् वैलक्षण्याच्च सर्वतः।
चक्रवर्ति कुमारोपि तस्याः साह्यमपेक्षते ॥५५॥

वाह्य कार्येषु प्राधान्यं भरतस्य यथामतम् ।
तथान्तरङ्ग लीलासु श्रैष्ठ्यमस्या मनोरमे ॥ ५६ ॥
किं वहुक्त न ते देवि यथार्थं वच्मितत्त्वतः
अस्याः प्रभाव माहात्म्यं रामो वेत्ति न चापरः ॥५७॥

अर्थः—उन सहस्रों सखियों में सोलह सखियाँ मुख्य कही गई हैं। सोलह सखियों के मध्य भी आठ यूथेश्वरियाँ मुख्य हैं। उनमें भी चार मुख्य हैं। उन केलि क्रीड़ा प्रवर्तक चार सखियों में भी यूथेश्वरियों की भी ईश्वरी मुख्यतमा एक सखी हैं। ५०-५१॥ (१) श्रीचन्द्रकलाजी, (२) चारुशीला-जी (३) विमला जी (४) मदनकलाजी (५) हेमाजी (६) क्षेमाजी (७) सुभगा जी (८) पद्मगन्धाजी (९) लक्ष्मणाजी (१०) श्री श्यामलाजी (११) श्रीहंसीजी (१२) श्रीसुगमाजी (१३) श्रीवंशध्वजाजी (१४) चित्ररेखाजी (१५) तेजोरुपा जी (१६) इन्दिरावली जी। ये सोलह मुख्य यूथेश्वरी सखियाँ हैं। सुन्दरी तन्त्र, अगस्त्य संहिता, हनुमत संहिता तथा अन्य अग्रस्वामी जी के अष्ट्यामादि ग्रन्थों में इनका वर्णन आता है। नाम भेद उनके विशेष गुणों को लेकर किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ गुण मुख्य मानकर लिखा है, इसलिये नाना नाम भेद से सर्वत्र उन्हीं मुख्य सखियों का बोध करना चाहिये। इनमें भी प्रथम आठ नाम हैं, वे मुख्य हैं। उनमें भी १-चन्द्रकलाजी, २-चारुशीलाजी, ३-मदनकलाजी और

श्री सुभगा जी ये चार मुख्य हैं। उनमें भी श्रीचन्द्रकला जू सर्व श्रेष्ठ हैं।

सर्व विद्या विशारदा, सभी कार्योंमें परमचतुरा, दम्पति के रस-सुख को बढ़ाने वाली जो श्रीचन्द्रकला नाम को सखी हैं, वे ऐश्वर्य चतुराई सौन्दर्य प्रिया प्रीतम को प्रसन्न करने वाले उत्तमगुण-गण तथा भाव एवं लीला वैदग्ध्य में सभी अन्य सहचरियों की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ हैं।

यद्यपि सभी यूथेश्वरियाँ दिव्य अलौकिक गुण–गणों के आगार ही हैं तथापि इनके गुणों कासबसे विशेष अभ्युदय जानकर सभी इनकी आज्ञा प्राप्त करने की प्रतीक्षा में रहती हैं। सभी बातों में विलक्षण तथा श्री राजकिशोरीजी की परम प्रीति पात्रा होने के नाते श्रीराघवेन्द्र कुमार भी समय समय पर इनकी सहायताकी चाहना करते हैं। वाह्य कार्योंमें जैसे श्री भरतलाल जो का स्वतन्त्र सर्वाधिकार है, प्रभु की अन्तरङ्ग लीलाओं में उसी प्रकार श्रीचन्द्रकला जी प्रधानता में सर्व श्रेष्ठ हैं। विशेष विस्तार कर के कहने में क्या रक्खा है। हे देवि ! मैं वस्तुतः जो यथार्थ बात है वह कह देता हूँ कि इनका प्रभाव और माहात्म्य श्रीरामजी ही जानते हैं। दूसरा कोई पूर्णतः नहीं जानता ।। ५७ ।।

श्लोकः—एषाहि सर्व शक्तीनामीश्वरी गुणमण्डिता ।
प्राणैः प्रियतरा नित्यं श्री सीतारामयोः सदा ।।५।।
(लोमश संहिता अध्याय १६ श्लोक–६)

अर्थः—श्री शंकर भगवान श्री पार्वती जी से कहते हैं:— हे देवी ! ये ही श्री चन्द्रकला जी सर्व शक्तियों की ईश्वरी (स्वामिनी) हैं। सर्व गुणों से युक्त हैं। बहुत क्या कहा जाय ? श्रीसीताराम जी की निरन्तर प्राणों से भी प्रियतरा हैं। ग्रन्थकार के यह "तरा" प्रत्यय देने से कहाँ तक प्रीति की अधिक पात्रा श्री चन्द्रकला जी हैं, वह किसी की वाणी में नहीं आ सकता।

कौशल--खण्ड :----

चन्द्रार्चिता चन्द्रकलाभिसेव्या,
चन्द्रावती चर्चित चारु रूपा।
भद्रानुभाव्या भवभूति वन्द्या,
वैदेह वंश्येति पतिं मृदूचे ॥

(ब्रह्म रामायण, कौशल खण्ड, अ० ६ श्लोक—१२)

अर्थ:--श्रीचन्द्राजी से पूजिता जो श्रीचन्द्रकलाजी उनसे जो अभिसेव्या श्री मैथिली जी हैं। यहाँ श्री चन्द्रा जी उप-लक्ष्य हैं अर्थात् श्री चन्द्राजी से लेकर जहाँ तक जो सखी गण हैं, उन सब से जो पूजिता श्री चन्द्रकला जी हैं, उनसे सब प्रकार से सेवित श्री मैथिली जी हैं।

अगस्त्य संहिता :--

अगस्त्य संहिता में भगवान श्री अगस्त्य जी ने श्रीविदेह

राज किशोरी जू की अति प्रिया मुख्यतमा सखियों के नाम आदि में श्री चन्द्रा-चन्द्रकला लगाकर ही गिनाये हैं ।

❋ श्लोक ❋

चन्द्रा चन्द्रकला चान्द्री चन्द्रकान्ता च चन्द्रिका ।
चन्द्रमुखी चंचरी चंचु चन्द्रचूड़ाव बोधिनी ।।
चारूनेत्रा चरोच्चारा चारिका चारुदायका ।
चावांगी चंचला चैला चारुका चारुमोदिका ।।
... ...आदि ।।

शिव संहिता:—

दशवें अध्याय में प्राण प्रीतम रघुनन्दन के साथ सखी गणों की वृहद् लीला का वर्णन भगवान शंकर करते हैं, जिसका प्रारम्भ चन्द्रादि चर्चिता सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जू के साथ होता है ।

।। श्लोक ।।

तर्जन्या तर्जयत्काचिद्विप्रलब्धा स्ववंचकम् ।
मुखांभोजं चुचुंवास्य चन्द्राख्या चतुरा सखी ।।
प्रेयस: करमाधत्ते कुचे चन्द्रकला मृदौ ।
चन्द्राकान्त कपोलं स्वकपोलेन न्योजयत् ।।

❀ श्री भुशुण्डि रामायणः— ❀

गोप्य उचुः—

नित्य सिद्धा वद ब्रह्मन् ब्रूहि साधन सिद्धिगाः ।
ऋग् रुपा ऋषिरूपाश्च तासां मध्ये वयं च काः ॥१॥

श्रीराम उवाच—

प्रमोद विपिने नित्ये चिन्मये ब्रह्म संज्ञिते ।
मद्रूपा नित्य सिद्धास्ता भवत्यः पश्यत प्रियाः ॥२॥
इत्युक्त्वा स्वाङ्ग रश्मिभिः प्रादुर्भावितवान् प्रभुः ।
ताः षोड़श सहस्त्राणि प्रादुरासुः समंततः ॥३॥
एतास्ता नित्य सिद्धा ये शशि मुख्यः सुलोचनाः ।
प्रियाः षोड़स साहस्त्रं नित्य लीलाधिदेवताः ॥४॥
तासां मध्ये षोड़शैव मुख्याः स्यु र्वाम लोचनाः ।
रामा श्यामा चन्द्रकला मञ्जुला ललिता लताः ॥५॥
लासिनी भामिनी भासा सुदीप्तिः सुरुचिः प्रभा ।
चञ्चला कनका काम्या कामिनीति निरुपिताः ॥६॥
(श्री भुशुण्डि-रामायणे चतुष्पञ्चाशतमोऽध्यायः) ॥५४॥

श्री भुसुण्डि रामायण, पूर्व खंड, अध्याय ५४ में श्लोक संख्या—२-से ६ तक स्वयं श्री कौशलेश नन्दन जू ने श्रीमुख से श्री सरयू पार में स्थित ब्रज प्रदेश के कामिका वन की गोप कन्याओं से कहा है।

गोपियों का प्रश्न था कि ब्रह्मन् ! कृपया १ नित्य सिद्धा, २–साधन सिद्धा, ३- ऋग्रुपा तथा ४- ऋषिरुपा सखियों का विवरण करें। उनमें हम सब किस कोटि में हैं, इसे भी बताने की कृपा करें।

इस पर श्री रघुलाल जी कहते हैं :—

स्वयं ब्रह्म ही कहाने वाले नित्य चिन्मय प्रमोद वन की रासकारिणी सखियों में नित्यसिद्धा मेरी ही स्वरूप-भूता हैं। हे प्रियाओ ! उन्हें तुम सब स्वयं भी देख लो। मैं दिखाता हूं।

ऐसा कहकर श्री रासविहारी चक्रवर्ती नन्दन ने अपने ही श्री अङ्गों के तेज से उन सोलहो हजार सखियों को प्रगट कर चारो ओर फैला दिया और कहा—

हे प्रियाओ ! यही सोलह हजार चन्द्रवदनी एवं मृग-नयनी नित्य सिद्धा प्रियायें नित्य लीला की अधिदेवता निरुपित की गई हैं।

इनमें ये षोड़श सुलोचनायें सर्व प्रधान हैं—

१- श्रीरामा जी, २- श्रीश्यामा जी ३-श्रीचन्द्रकलाजी ४- श्रीमंजुला जी, ५- श्रीललिता जी, ६- श्रीलता जी ७- श्रीलासिनी जी, ८- श्रीभामिनी ली, ९- श्रीभासा जी १०- श्री सुदीप्ति जी, ११- श्रीसुरुचि जी, १२- श्रीप्रभा

जी १३-श्रीचंचला जी, १४-श्रीकनका जी, १५-श्री-काम्या जी तथा १६-श्रीकामिनी जी।

❀ देवल संहिता ❀

'श्री राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय' के पृष्ट २३८ पर ग्रन्थ के लेखक डा० भगवती सिंह जी ने श्री मिथिलेश राज किशोरी जू की बहनों (महाराज जनक तथा उनके भाइयों की निम्नांकित बीस पुत्रियां) के नाम देवल संहिता के आधार पर लिखे हैं। जिसमें सर्व प्रथम सर्वेश्वरी श्री-चन्द्रकलाजी का नाम है।

१ श्रीचन्द्रकलाजी, २ श्री सुषमाजी, ३ श्री परमा जी, ४ रतिवर्द्धिनी जी, ५ मोदिनी जी, ६ तरङ्गा जी, ७ उमङ्गा जी, ८ माधुर्याजी, ९ विहारिणीजी, १० श्रुतिकीर्ति जी ११ मांडवीजी, १२ उर्मिलाजी, १३ श्रीसीताजो, १४ चारुशीलाजी, १५ क्षेमाजी, १६ वरारोहाजी, १७ पद्मगन्धा-जी, १८ सुभगाजी, १९ लक्ष्मणाजी, २० हेमाजी।

शृङ्गार रस प्रवर्त्तकाचार्य श्री अग्रस्वामी जी महाराज

सर्वासां सुसखीनांतु प्रेरिकां गुण सागराम्।
जानक्याः प्रेरम प्रेष्ठां कोकविद्या विशारदाम् ॥१॥
रसिकानामाचार्यांतां वीणा वादन तत्पराम्।
दम्पत्योः केलि मर्मज्ञां वन्दे चन्द्रकलां सखीम् ॥२॥

अर्थः—समस्त सखियों को प्रेरणा देने वाली गुण-सागरी श्री मिथिलेश राजनन्दिनी श्री जानकी जू की परम प्रियतमा कोक विद्या विशारदा रसिक कुल आचार्या वीण-वाद्य कुशला दिव्य दम्पति (भगवान श्री सीतारामजी) केलि मर्मज्ञा सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू की मैं (श्रीमद्-अग्राचार्य जी महाराज) वन्दना करता हूं।

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज :--

श्री रामचरित मानस के फुलवाड़ी-प्रसङ्ग में लिखते हैं कि

"एक सखी सियसंग विहाई। गई रही देखन फुलबाई।।"

एक का अर्थ चन्द्रमा अर्थात् श्रीचन्द्रकला नाम्नी प्रधान सखी पुष्प वाटिका देखने गई थी। उनहीं को—

"चली अग्र-करि प्रिय सखि सोई" आगे कर चली।

श्री युगल-प्रियाजी महाराज ने श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल में गोस्वामी जी महाराज के इसी आशय का स्पष्टीकरण इस तरह किया है—

अग्रस्वामि श्री अग्र सहचरी जनकलली की।
पुष्प वाटिका मिलन हेतु प्रिय भाँति भली की।।
चन्द्रकला वर नाम श्याम सिय बश करि राखी।
प्रगटि स्वामि पद लही ध्यान रस मन-मन चाखी।।

"पुष्प बाटिका में दोऊ गये दल फूल लेन
तहाँ अग्रगामिनी ह्वै लाल को बताये हैं।
महल विहारिणी विहार अग्रसहचरी
'चन्द्रकला अली' 'अग्रअली' सों जनाये हैं।"

(श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल)

❀ श्री सूर किशोर जी महाराज ❀

श्री सूर किशोर जी महाराज ने अपने "श्री मिथिला-विलास" नामक ग्रन्थ में किन्हीं और सखी का कोई विशेष परिचय नहीं दिया है। फिर भी सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी का निमिवंश में प्राक्ट्य बतला कर ग्रन्थ में बार-बार अपनी एक मात्र आचार्या श्रीचन्द्रकलाजी का ही स्मरण किया है—

सीर ध्वज मन्दिर उत्तर के दिशि,
मन्दिर एक विचित्र विराजैं।
गोपुर—गोपुर चौघड़ि बाजत
शृङ्गन में रबिचन्द्र सुभ्राजैं।
छत्र कंगूरन पै सु विहङ्गम,
वात प्रसङ्ग सुगुञ्जत राजैं।
हय गज यान पदाति हैं संकुल,
सूर किशोर महाधन साजैं ॥४४॥

चन्द्रमनी वैडूर्य पिरोजरु, कौस्तुभ कंचन जू प्रवरा हैं।

सिन्धु सुरुक्ष मनोहर निर्मित, हर्म्यं सुमण्डप द्वारि वरा हैं ।।
शालिध्वज शुभ बास तहाँ तिन,
शीलवती तिय कीर्ति वरा है ।
तासु सुता प्रिय चन्द्रकला,
सुछविनिधि सूर किशोर सराहैं ।।४५।।

जनकलली मधुरे स्वर गावैं ।
नई–नई तान सुनावैं सहचरि,
चन्द्रकला अलि वीन बजावैं ।।
कोउ अलि मधुर मृदङ्ग बजावैं,
कोउ सखि रीझि रीझि गुन गावैं ।
कोउ सखि रैन दिवस सुधि भूली,
कोउ सखि मुख पर भौंर उड़ावैं ।।
राज किशोरि विराजैं महल में,
बिन सखियन कोउ जान न पावैं ।
'सूर किशोर' बलैया लेहीं,
कोउ सखि ब्याह की बात चलावैं ।।

स्वामी श्री मधुराचार्य जी महाराज :—

श्री माधुर्य्य केलि कादम्बिनी:—

अनन्त श्रीअग्रस्वामीजी महाराज के गुरु भ्राता श्रीकील-स्वामी जी के कृपाश्रित गलता गाद्याधीश मधुराचार्य्य जी

ने अपने ग्रन्थ "श्री माधुर्य्य केलि कादम्बिनी" में अपनी आचार्या सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जी की प्रथम वन्दना की है :—

❀ श्लोक ❀

गान्धर्वेषु च पारगा सुसखिषु सर्वासु मुख्यातुया ।
दम्पत्योस्सुख स्वाद राग निरता स्वप्नेन वाञ्छापरा ॥
यावद्रास विलास कार्य्यमखिलं कर्त्री स्वतन्त्रास्तयोर्स्ता ।
वन्देन्दुकलां परां सुरसिकाचार्य्यां तु सीतासखीम् ॥

स्वामी श्री हरियाचार्य जी :—

श्री जानकी गीत :—

स्वामी श्री मधुराचार्यजी महाराज के शिष्य 'श्री-जानकी गीत' कार स्वामी श्री हरियाचार्य जी अपने प्रधान रसग्रन्थ 'श्री जानकी गीत' में प्रिया-प्रीतम की रहस्य-लीलाओं में परिकरों के बीच प्रधान सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जी को ही दिखाया है और भाष्यकार श्री बलदेव सूरि ने समस्त ग्रन्थ में लीला के पात्रों में श्री चन्द्रकला जी की प्रधानता दिखायी है :—

❋ श्लोक ❋

श्रुत्वा वसन्त श्रियमाशुकान्तां,

जातास्पृहासौ जनकात्मजासीत् ।

यथाब्रबीच्चन्द्रकला चलाक्षी,

सानन्दमेनां चरितानिपत्युः ।।

अर्थ :—बसन्त शोभा वर्णन सुनकर श्री राजकिशोरी जू प्राण प्रीतमजू से मिलने की ईच्छुक हुई । तब चञ्चल नेत्र वाली प्रियाजू की प्रिय सखी श्रीमती श्रीचन्द्रकला जी आनन्द युक्त होकर श्री प्राण बल्लभ जू का चरित्र कहने लगी ।

श्री बाल अलीजीः—

श्री कृपा निवासजी महाराज के सम्बन्ध-सूत्र के गुरू बाल अलीजी महाराज ने अपनी ध्यान मंजरी में अनन्त सखियों के बीच सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलादि सखियों को ही मुख्यतमा लिखी है । :—

श्री विमला अरु चन्द्रकला चन्द्रा पुनि पद्मा ।

माध्वी कर्पूर राज्ञी सिता असिता सुख सद्मा ।।१५८।।

इनहिं आदि दै दलनि मुदित सोहत सखि श्रेनी ।

सेवहिं युगल किशोर अमल पङ्कज दल नैनी ।।१५९।।

रास में प्रिया प्रीतम जू का मनोभाव जानकर सर्वेश्वरी जू ने ही वीणा-वादन से चन्द्र स्तम्भन किया था :-

॥ दोहा ॥

रस विलसत प्रीतम सुखहिं, चिर निशिचाह प्रवीन ।
चन्द्रकला चन्द्रहिं निरखि, मधुर यन्त्र स्वर कीन ॥
(नेह-प्रकाश)

श्री कृपानिवास जी महाराज :-

महाराज ने अपने 'रहस्योपास्य' नामक ग्रन्थ में स्पष्ट किया है :-

अब सुनु लली लाल अलि मुखिया ।
सबहीं भाव रहस वश झुकिया ॥
चन्द्रकला पुनि मदन कला अस ।
सेवा अवधि रहत नित युग बश ॥

श्री सीतायन कार श्री राम प्रिया शरण जी :-

श्री सीतायन जी :-

श्री सीतायन जी के जयमाल कांड के द्वादश मधुरता में ग्रन्थकार स्वामी श्री राम प्रिया शरण जी श्री मिथिलेश राजनन्दिनीजू की षष्ट सखियों के नाम इस तरह गिनाते हैं:-

॥ दोहा ॥

षष्ट सखी नामावली, ता को कहौं बुझाय ।
जो इनमें अनुराग कर, तेहि सिय पद दर्शाय ॥

॥ चौपाई ॥

अह्लादिनी अह्लाद स्वरूपा । सहजानन्दिनि परम अनूपा ॥
मदन मंजरी सुख की खानी । चन्द्रकला आनन्द रसदानी ॥
चन्द्रावती सकल गुण ऐनी । चन्द्रमुखी ई छवो मृदुवैनी ॥

फिर प्रीतम रघुनन्दन जू के पक्ष की षष्ट सखियों के नाम गिनाते हैं :—

लक्ष्मणा शुभ लक्षण सागरि ।
अह्लादिनि दुहुं ओर उजागरि ॥
चारुशिला वरशील सोहावनि ।
अतिशीला छबि सागरि पावनि ॥
सुशीला सब गुण की खानी ।
हेमा छबि नहिं जात बखानी ॥
(श्री सीतायनजी, जयमाल कांड, द्वादशमधुरता)

श्री करुणा सन्धुजी महाराज :—

(श्री रसिक अली जी के गुरू स्वामी श्री रामचरण दास जी)
'श्री रामचरित मानस' के प्रथम टीकाकार स्वामी

श्री रामचरण दास (श्री करुणा सिन्धुजी महाराज) जी ने बालकाण्ड-विवाह प्रसङ्ग के—

"चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥"

के अर्थ में श्री मिथिलेश राजनन्दिनी जू की षष्ट सखियों के नाम इस प्रकार गिनाये हैं :—

द्वौदिशि अह्लादिनी, सहजानन्दिनी, मदनमञ्जरी, चन्द्रकला, चन्द्रावती और चन्द्रमुखी।

पुनः श्री रघुनन्दन जू की षष्ट सखियों के नाम:—
दौदिशि अह्लादिनी, चारुशीला, अतिशीला, सुशीला, हेमा और लक्ष्मणा।

टीका में कई स्थलों पर ऐसा ही वर्णन है। इस प्रकार पूर्वाचार्यों की तरह श्री करुणासिन्धु जी महाराज ने भी श्रीचन्द्रकलाजी को प्रिया पक्ष की सखी तथा श्रीचारुशीला जी को प्रीतम पक्ष की सखी मानी है और प्रिया पक्ष की होने के नाते श्री चन्द्रकला जी की विशेषता प्रगट की।

श्री रसिक अलीजी महाराजः—

अनन्त श्री करुणासिन्धुजी महाराज के कृपा पात्र (शिष्य) श्री रसिक अलीजी महाराज ने अपने 'श्री सीता-

राम रस चन्द्रोदय' नामक ग्रन्थ में श्रीमती श्री चारुशीला जी के साथ ही सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जी की वन्दना की है तथा बाद में और सखियों की। यथा :—

"वन्दे श्री चारुशीलायाः पाद युग्मस्य रेणुकां कृपया प्राप्यतेयस्याः जानक्याः पाद सेवनम्। कलायाश्चन्द्रमा यस्या जातश्चन्द्रकलेति तां नमाम्यहम् ॥"

"शृङ्गार रहस्याचार्यः श्री चारुशीला श्री चन्द्रकलाद्याः सख्यः सर्वा।"

॥ श्लोक ॥

श्री जानक्या वयस्याहि नाम्ना चन्द्रकला शुभा।
तस्यावतारो लोकेस्मिन अग्रदासेति विश्रुतः ॥१४॥
येन श्री राम सीतोक्ता शृङ्गार रस सम्प्रदा।
सम्बन्ध भेद भावेन भक्तेषु प्रगटी कृता ॥१५॥
(श्री रसिक अलीजी कृत श्री सीताराम रस चन्द्रोदय)

अर्थ:—श्री मिथिलेश राजनन्दिनी श्री जानकी जी की सखी जो श्री चन्द्रकला नाम की हैं उन्हीं के अवतार श्री अग्रदास जी कर के लोक में विख्यात हैं ॥१४॥

जिनसे श्री सीतारामजी के श्रृंगार रस सम्प्रदाय का सम्बन्ध भेद-भाव द्वारा उपासकों के बीच प्रचार हुआ है ॥१५॥

अमर रामायण :-

॥ श्लोक ॥

नीराजनान्तर मादृतास्ताः श्रीचारुशीलेन्दुकलादि मुख्याः।
शय्या गृहे राघव सीतयोस्तु कुर्वन्ति गानं ललितं प्रभाते ॥१॥
(प्राचीन पाठ। श्री रसिकअली जी कृत अमर रामायण सर्ग-२६ श्लोक—१)

अर्थः—सुन्दर प्रभात काल में मंगला आरती (उत्थापन आरती) के बाद सखिगणों से समादृत श्रीचन्द्रकला-चारुशीलादि प्रधान सहचरियाँ दिव्य दम्पति भगवान श्रीसीता-रामजी के केलि कुंज (विहार गृह) में ललित राग का गान करती हैं। ॥१॥

सच्चिदानन्द ब्रह्म दाशरथी रामचन्द्र,
सागर में सेतु बान्ध्यो कीन्हों सुर काज हैं।
सोई कलिकाल 'रामानन्द स्वामी',
कीन्हों भवसागर में सेतु भक्ति आज हैं॥
तिनहीं के वंश सीताराम रस प्रगट हित,
चंन्द्रकला जू को अवतार अग्रराज हैं।
अग्र जू के वंश अवतंश 'रसिका' अवतार,
गायो रस ललित सिंगार सिरताज हैं॥
'रसिका' अर्थात् रसिक अलीजी।

श्री युगल प्रियाजी :--

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी का सर्वेश्वरीपना स्वामी श्री-युगल-प्रियाजी महाराज की वाणियों में यत्र-तत्र स्पष्ट है।

अब मोहि चन्द्रकला जू की आशा।
जनकलली जू की मुख्य सहेली विहरति सकल विलासा॥
चौरासी भव फंद छोड़ा कै रसिकन संग दियो बासा।
'युगल प्रिया' अब नहिं कछु शंसय विपिन प्रमोद निबासा।

श्री युगलानन्य शरणजी महाराज :—

(श्री लक्ष्मण किलाधीश)

चन्द्रकला सब विधि सुखकारी।
परमाचार्य पूज्यता त्रिभुवन अग्रगण्य अलियन सरदारी॥

... ...

युगन-युगन जियो जनक दुलारी 'युग्म' सजीवन प्राण पियारी॥

स्वामी श्री जानकीवर शरणजी महाराज :—

चन्द्रकला गुण ज्ञान निराली।
जनकलली की अली शिरोमणि प्रीति सुरीति सदा प्रतिपाली।
सोइ अह्लादिनी रूप प्रगटानी चन्द्रभानु घर-वर-खुशहाली॥

... ...

'जानकीवर' अनुराग भाग की 'प्रीतिलता' विकसीवर लाली।
जय श्री चन्द्रकला ठकुरानी।

परमैश्वर्या वैधी विज्ञा-रागानुगा-प्रधानी। सियअनुजा प्रिय अग्र गामिनी स्वामिनि रुख पहिचानी। मधुर केलि मुग्धन मन मोदक मधुरी छवि अरुझानी। सुर पादप प्रिय पाय प्रमोदक 'प्रीति लता' लपटानी॥

(स्वामी श्री जानकीवर शरणजी महाराज कृत 'प्रीति प्रवाह')

परमहंस श्री सियालाल शरणजी महाराजः--

(श्री प्रेमलता जी)

यहि विधि गई याम युग रजनी सजनी खबर जनाई है।
अवसर जानि सुनींद सहचरी आँखिन में धसि आई है॥
सुनि विनती रघुलाल लखी सिय जानी जिय अलसाई है।
'प्रेगलता' कहि करिय विसर्जन रासरङ्ग सुखदाई है॥१९॥
सुनि श्री चन्द्रकला गुण आगरि वीन विसर्जन बजवाई।

जानी सकल समाज त्यागि नृत गान तान स्वर समुदाई॥
खोलि रास पोशाक अपर अलि पहिरि २ प्रभु पहं आई।
'प्रेमलता' सिर नाइ जुहारि सुखड़ी जोरि कर सचुपाई॥२०
सबकी रुचि-शुचि बूझि दयानिधि सिय रुख लखि पिय मुसुकाये।
चन्द्रकला तन हेरि हरषि अलि होरिहिं निकट सु बुलवाये॥

कर धरि शीश कही कमला तट सजहु साज सुनि सुख पाये।
'प्रेमलता' अलि अमित संग लै चली चतुरि पद सिरनाये।।

(श्री प्रेमलता जू कृत षट्ऋतु विमल विहार दर्पण)

पिया तुम हो सुघर या कि मैं हूँ सुघर ?
होड़ पड़ी दोऊ दिशि अटपट, इतै जनकलली उतै रघुवर।।
करत शृङ्गार परस्पर दोऊ, आपुस में पड़ि गई है झगड़।
चन्द्रकला दर्पण धै सन्मुख, कहेउ लेहु निपटाय झगड़।।
'प्रेमलता' प्यारी छबि लखिकै, निज छवि लखि किये नीची नजर।

पंण्डित शिरोमणि स्वामी श्री रामवल्लभाशरणजी
(श्री जानकीघाट) महाराज की वाणी :—

(कौशल खण्ड की टीका के मङ्गलाचरण में)

१— जयति शक्ति सर्वेश्वरी, चन्द्रकला गुन खानि।
दायिनि प्रेम प्रसाद की, रङ्क जिवावनि वानि।।
२— सखिन शिरोमणि चन्द्रकले, तोहि विनवों करजोरि।
रसमय बुद्धि देहु मोहि, वरणौं रहस हलोर।।

भक्तमाली श्री मैथिली शरणजी महाराज की वाणी:—

भक्तमाली श्री मैथिलीशरणजी महाराज (माधुरी कुँज अयोध्या) ने 'निज मत सिद्धान्त सार' नाम की अपनी पदावली में श्रीचन्द्रकलाजी को श्री सिया स्वामिनी जू के पक्ष की प्रधाना तथा श्री चारुशीला जी को प्रीतम रघुनन्दन जू के पक्ष की प्रधाना मान दोनों को सर्वेश्वरी स्वीकार कर वन्दना की है। देखिये, पदावली के प्रारम्भ में ही वन्दना प्रसङ्ग में :—

हमारी सर्वेश्वरि महरानी ।।
चन्द्रकला अरु चारुशीलाजू सिय पिय की सुखदानी ।
दाहिन वाम भुजा सी सोहैं अंकमाल रसदानी ।।
इनके हाथ बिके दोउ लालन अपनी निधि निज मानी ।
'अलि सौन्दर्य' हमारी अपनी एकै माय बखानी ।।

पुनः अपने भक्तमाल में अनन्त श्री कोठे सरकार (स्वामी श्री राम किशोर शरण जी महाराज, अयोध्या) के चरित्र में भी श्रीचन्द्रकलाजी को सर्वेश्वरी लिखी है जो निम्न लिखित छप्पय में स्पष्ट है :—

❀ छप्पय ❀

उज्ज्वल रस अरु शान्त रस, मनो एक संग अवतरयो ।
श्री राम किशोर जू शरण भये जब से सिय पिय के,
उमगे रंग अनंग अंग-अंग रसिकन हिय के ।
यहितन तपन बुझाय लई इन राम रंग की,
भई भावना सिद्ध सजन के अंग संग की ।
सर्वेश्वरी श्री शशिकला स्वयं व्यूह दूसर धरयो ।
उज्ज्वल रस अरु शान्त रस, मनो एक संग अवतरयो ।।

स्वामी श्री रामहर्षणदासजी महाराज की वाणी:--
(श्री प्रेम रामायण का उद्धरण, चन्द्रकला प्रसङ्ग)

"एक दिवस सिय बैठि विविक्ता ।
राम प्रेम मय रँगी सुरक्ता ।।
'चन्द्रकला' लै सखिन समाजा ।
गईं तहाँ सिय दर्शन काजा ।।"
...   ...

चन्द्रकला सुनि वचन जानकी ।
गूढ़ रहस रस भरे खान की ।।
सिया मनहिं लखि गई महीनी ।
परम चतुर बहु कला प्रवीनी ।।
प्राण समान सीय प्रिय आली ।
सिय मुख मलिन न देखन वाली ।।
मनहीं मन अस कीन्ह विचारा ।
सिय सुख लहैं सुधर्म हमारा ।।"
...   ...

"करि निश्चय बोली कर जोरी ।
सुनहु सिया मिथिलेश किशोरी ।।
बालहि ते तव कृपा महानी ।

मो पै रही सखिन सह सानी ।।
खेलब खाब पढ़ब संग भयऊ ।
दरसन प्यास सदा बस कियऊ ।।
नृत्य गान कल कला नाटकी ।
योग सिद्धि सब गुन सुठाटकी ।।"
कृपा तुम्हारि सकल हम पाई ।
सेवा हित तव सो निपुणाई ।।
सेवा करहिं सखिन मिलि साथा ।
होहिं सबहिं तव सुखी सनाथा ।।
... ...

"चन्द्रकला शुभ आयसु धरिकै ।
सखि सब साज सजी मुद भरिकै ।।
रत्न निकुञ्ज बैठि शुभ सीता ।
नखत बीच जनु चन्द्र पुनीता ।।
सखिगण पूजि आरती कीन्हीं ।
बीड़ा गन्ध माल पुनि दीन्ही ।।
पानि जोरि शशिकला प्रवीनी ।
बोली मधुर वचन रस बोरी ।।"

दो०-स्वामिनि हम सबहीं सुनी, कथा रमायण केर ।
मातु पिता अरु संत मुख, ऋषि मुख कै यक बेर ।।
(श्री प्रेम रामायण, मिथिला काण्ड)

श्री कनक भवन का रोमाञ्चकरी इतिहास :—

श्री कनक भवन के रोमाञ्चकारी इतिहास' के 'शयनकुंज' नामक शीर्षक लेख के २०३ पृष्ठ पर स्पष्ट उल्लेख है कि श्री किशोरी जी के पक्ष की अष्ट यूथेश्वरियों में प्रधान सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी हैं तथा श्री राघवेन्द्र सरकार के पक्ष की अष्ट यूथेश्वरियों में प्रधान श्री चारुशीला जी हैं। यथा :—

श्री किशोरी जी के पक्ष में :—

१-प्रधान सहचरी,	सेवा :—
सर्वेश्वरी प्रमुख	नृत्य, गायन, वादन
यूथेश्वरी पराचार्या	तथा संगीत कुशलता से
श्री चन्द्रकला जी	श्री प्रियाजी को रिझाना।

श्री राघवेन्द्र सरकार के पक्ष में :—

१-प्रधान सहचरी	सेवा :—
प्रमुख यूथेश्वरी	नृत्य, गायन, वादन, संगीत द्वारा
श्री चारुशीला जी	प्रीतम जी को रिझाना।

इसी ग्रन्थ के 'महल की सेवायें' नामक शीर्षक लेख के पृष्ठ-२२६-पर स्पष्ट उल्लेख है कि श्री लखन लाल जी, श्री भरत लाल जी, श्री हनुमन्त लाल जी आदि सभी इस

महल में भगवान आदि पुरुष की सभी सेवायें नारी रूप में ही करते हैं :—

श्री भरत लाल जी — श्री चन्द्रकला जी।

श्री हनुमन्त लाल जो -- श्री चारुशीला जी।

महल की सेवा में श्रीचन्द्रकला जी तथा श्रीचारुशीला जी की प्रधानता है। दोनों श्री युगल सरकार की मुख्य यूथेश्वरी हैं। श्री चन्द्रकला जी की प्रधानता श्री मिथिलेश राज किशोरी जी के दरबार में है और श्री चारुशीला जी की प्रधानता श्री कौशल राजकिशोर के दरबार में है।

शृङ्गार रस देश में नायिका की प्रधानता होने के करण, दोनों सर्वेश्वरी होती हुई भी श्री चन्द्रकला जी में विशेषता सिद्ध होती है जो शास्त्र-पुराण तथा आचार्य-वाणियों से भी सिद्ध है।

इस तरह वेद संहितादि प्रमाणों के अलावा समस्त प्राचीन और अर्वाचीन रसिकाचार्यों की वाणियों में एक स्वर से श्रीचन्द्रकलाजी सर्वेश्वरी स्वीकार की गई हैं। कारण, प्रिया (श्री मिथिलेश राजनन्दिनी जू) पक्ष की सर्व प्रधाना यूथेश्वरी होने कें नाते प्रीतम (श्री रघुनन्दनजू) पक्ष की यूथेश्वरियों में भी सर्वोपरि सिद्ध हुईं। नहीं तो, वैसे प्रिया पक्ष की प्रधान यूथेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी और प्रीतम पक्ष की श्री चारुशीला जी निर्विवाद सिद्ध हैं। इसके विपरीत

कुछ कहना सर्वाधिक अपराध (पाप) करने के साथ ही अपनी नितान्त (असीम) मूर्खता (अबोधपना) प्रगट करना है।

निमिवंश में प्राक्ट्य :—

❀ श्लोक ❀

स्वर्ण रोमस्तु राजर्षेः पुत्रः सुव्रत संज्ञकः।
तस्य भार्या च श्री भावा तयोः पुत्रः प्रतापवान ॥२५॥
चन्द्र भानु रिति ख्यातः सुशीलः सर्व रञ्जकः।
भार्या चन्द्र प्रभा तस्य साध्वी सर्व गुणालया ॥२६॥
(लो० सं० अ०-१६)

चन्द्रभानु गृहेरम्ये महार्हे मणि चित्रिते।
चन्द्रप्रभा यामुत्पन्ना कन्या कल्याणदा सताम् ॥९॥
(अ० १७ श्लोक ९)

तस्माच्चन्द्रकलेत्यस्या नाम सिद्धं पुरातनम्।
सर्व सिद्धि करं नृणां जपतां काम भूरूहम् ॥३९॥
(अ० १७)

महिषी श्री चन्द्रभानोर्नाम्ना चन्द्रप्रभा चैव।
जानक्याः पार्श्वस्था चन्द्रकला नामिका पुत्री ॥३३॥
(श्री जानकी चरितामृत, अ० ८, श्लोक ३३)

कबित्त :—

भ्राता चारि मूल में विदित ग्रन्थकार कहे,
और निमिवंशी अष्ट भ्राता सुखदानी हैं।
वात्सल्य भाव में मगन उन्मत्त सबैं,
जिनके निहारे जगवासना हिरानी हैं॥
तिनहीं के भवन चन्द्रकला चारुशीला आदि,
सियाजू की मुख्य सहचरी प्रगटानी हैं॥
(श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल)

॥ दोहा ॥

जनकललो प्रगटी जबै, जनक नगर में आय।
जनम लियो मिथिला तबै, सकल सखी समुदाय॥२६॥
ते सिय संग विनोदिनी, वय गुन रूप समान।
बाल सखी हैं आठ वर, प्यारी परम प्रधान॥३१॥
श्री राम रसायन पृष्ठ-१४६-

छन्द :—

चन्द्रकला उर्वशी-सहोद्रा कमला विमला मानो।
चन्द्रमुखी मेनका सुरंभा आठ मुख्य ये जानो॥
प्यारी सखी विदेह सुता की बाल संगिनी सोहै।
इनहिं आदि सहचरी धन जिहि देखि शचीरति मोहै॥
श्री राम रसायन, छन्द संख्या-३२-

॥ दोहा ॥

सप्त-सप्त यूथेश्वरी, इक-इक सखि स्वाधीन ।
हैं सहस्र यूथेश्वरी, प्रति अनुचरी प्रवीन ॥
सानुचरी यूथेश्वरी, संयुत सखी सुढङ्ग ।
दीनी जनक दहेज ते, आईं सिय के संग ॥३४॥
पुनि इत कौशल्या सियहिं, दई सखी दश और ।
ते मिलि अष्टादश भईं, सर्बं सखिन सिरमौर ॥३५॥

छन्द :—३६

प्रथम चारुशीला पुनि राधा अरु सुभगा लखु छेमा ।
मृग लोचना मालिनी हरिणी कहि सुलोचना प्रेमा ॥
सुधामुखी ये विशद सखी दश दई कौशिला रानी ।
सरिस रूप वय गुण सप्रीति सब, जनक सुता सुखदानी ॥
(श्री राम रसायन) पृष्ठ १५०-

प्रियाजू के मान मोचन के लिये सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जू से प्रीतमजू की प्रार्थना :—

चन्द्रकला परम प्रवीन गुण आगरी हो,
जाय प्राण प्यारी ढिग कहो करजोरिकै ।
सुभग सलोनी तुम सुन्दर चतुर वाल,
प्रिया को मिलावो वेगि नेह रस बोरिकै ॥
(राम रसायन- घनाक्षरी कवित्त-पृ०-५१६

श्री सूर किशोरजी महाराजः-

चन्द्रमनी वैडूर्य्य पिरोजरु, कौस्तुभ कंचनजू प्रवरा हैं।
सिन्धु सुकक्ष मनोहर निर्मित, हर्म्य सुमण्डप द्वारि वरा हैं॥
शालिध्वज शुभवास तहाँ तिन, शीलवती तियकीर्ति वरा हैं।
तासु सुता प्रिय चन्द्रकला, सु छबिनिधि 'सूर किशोर' सराहैं॥४५॥

(श्री सूर किशोरजी महाराज कृत 'मिथिला-विलास)

श्री युगल प्रियाजी महाराज :-

जय श्री चन्द्रकला अलबेली।
अति सुकुमारि रुप गुण आगरि नागरि गर्व गहेली॥१॥
निमिकुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रियकारी रसकेली।
चन्द्रप्रभाजू की सुकृत कलपतरु उलही लता नवेली॥२॥
काँचन वन कमला प्रमोद-वन लीला लहरि रिझेली।
मोहनि यन्त्र वीण स्वर टेरति प्रीतम चित्त विथैली॥३॥
शरणागत पालिनि रस मालिनि चालनि गजगति हेली।
'युगलप्रिया' अनुराग सदा सम्बन्ध राग की मेली॥४॥

अनन्त श्री रसरङ्गमणी जी महाराज कृत श्रीजानकी यशावली का एक "उद्धरण" :—

दोहाः—

सखी सदा की सेविका, सीता अंश स्वरूप।
जनमीं वहु निमि वंश मँह, तिन मँह अष्ट अनूप ॥
चारुसुशीला लक्ष्मणा, सुभगा मदनकलाम।
चन्द्रकला विमला कृपा, कमलादिक छबिधाम ॥३७॥
(श्रीजानकी यशावली)

श्री मज्जनक राज किशोरी जू की पार्श्ववर्तिनी श्रीचन्द्रकलाजी :—

श्लोक :—

वन्दे चन्द्रकलां शरच्छशिमुखीं श्यामारविन्देक्षणाम्।
भक्तानां भयनाशिनीं करुणाया संकल्प सिद्धि प्रदाम् ॥
श्री रामेष्टकरीं स्वयं जनकजावामे सदा संस्थिताम्।
सर्वाशा परिपूरणीं विजयते देवीं भजे शर्म्मदाम् ॥
(श्रीलोमश संहिता, अध्याय २१, श्लोक ५६)

अर्थः—सरच्चन्द्रमा के समान पूर्ण मुख, श्री सम्पन्न श्याम अरविन्द के समान विकसित राजीवलोचना श्रीचन्द्रकलाजी की मैं चरण वन्दना करता हूं। भक्तों का भयनाश करने वाली कृपा करके आश्रितों के संकल्पों को सिद्ध करने वाली श्रीरामजी का प्रिय करने वाली श्रीचन्द्रकलाजू का सर्वदा

विजय हो। श्री मिथिलेश राजनन्दिनी जू के वाम भाग में सदा विराजमान कल्याण प्रदायिनी सर्व मङ्गल दायिनी श्रीचन्द्रकलाजू का मैं भजन करता हूं।

श्लोक :—

महिषी श्रीचन्द्रभानोर्नाम्ना चन्द्रप्रभा चैव।
जानक्या: पार्श्वस्था चन्द्रकला नामिका पुत्री॥

(श्रीजानकी चरितामृत, अध्याय ८, श्लोक ३३)

अर्थ:— श्रीचन्द्रभानुजी महाराज की महारानी श्रीचन्द्र प्रभा नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी पुत्री श्रीजनकदुलारीजू के सदा वाम भाग में बिराजने वाली श्रीमती चन्द्रकलाजू हैं।

वामे चन्द्रकला नाम्नी जानकी व्यूह विग्रहा।
महाभाव स्वरूपा सा सखीनामीश्वरी स्मृता॥

(श्रीमत्कौण्डिन्य संहिता, पटल-५-अध्याय-३३)

अर्थात् श्रीमज्जनकराजकिशोरी जू के वाम भाग में महाभाव स्वरूपा इनका (श्रीजानकीजी का) साक्षात् व्यूह-विग्रह—अर्थात् अपरामूर्ति सब सखियों की ईश्वरी—सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलाजी 'सदा सर्वदा विराजमान' रहती हैं।

(सुदूर दक्षिण में ताड़ पत्र पर द्रविड़ाक्षर में लिखित अत्यन्त प्राचीन प्रति में भी यह प्रमाण उपलब्ध है)।

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी और महामहिम श्रीभरतलालजी की अभिन्नता :—

आर्ष ग्रन्थ 'श्रीरहस्य रामायण' का प्रमाण है :—

श्लोक: —

लक्ष्मणा लक्ष्मणं प्रोक्तं भरतश्चन्द्रकलातथा ।
शत्रुघ्नो सुभगा याता चारुशीला तु मारुतिम् ।।

अर्थ:— श्रीलक्ष्मणाजी श्रीलक्ष्मण कुमार हैं। श्रीचन्द्र कलाजी श्रीभरत कुमार हैं। श्रीसुभगाजी श्रीशत्रुघ्नकुमार हैं तथा चारुशीलाजी श्रीहनुमन्तलालजू हैं।

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी और श्रीभरतजी को अग्र स्वामीजी महाराज़ भी अपने 'श्रीअग्र रहस्य चन्द्रिका' नामक ग्रन्थ में अभिन्न बताते हैं यथा :—

श्लोक :—

सीताराम कृपा मूर्तिः ज्ञेया च चन्द्रकलाभिधा ।
यूथेश्वरीषु पूज्या यासा भरतोऽभूद्वाह्यके भवत् ।।
"चारुशीलापि विज्ञेया महत्यूथेश्वरी खलु"
चारुशीलमणिः सख्ये दास्ये च हनुमान्कपि ।
लक्ष्मणा लक्ष्मणः साक्षात् शत्रुघ्नः सुभगा भवेत् ।१८२।

अर्थ:—श्री सीतारामजी की कृपा मूर्ति जो श्री चन्द्रकला नाम

से प्रसिद्ध हैं और यूथेश्वरियों में सर्व पूज्या हैं सो श्रीचन्द्रकलाजी श्री भरतलालजी हैं। श्री चारुशीलाजी जो महायूथेश्वरी हैं, सख्य भाव में श्री चारुशीलमणिजी हैं और दास्य भाव में श्री हनुमान्‌जी हैं, श्रीलक्ष्मणाजी श्रीलक्ष्मणजी और श्री सुभगाजी श्री शत्रुघ्न कुमार हैं।

श्री जानकी चरितामृत में सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलाजी और श्री भरतलालजी का ऐक्यः—

श्लोकः—

तयोर्ज्ञात्वा मानोभावं द्रुतं चन्द्रकला स्वयम्।
वभूवर्तर्हि भरतो लक्ष्मणा लक्ष्मणो भवेत्॥३२।
ततः कमल पत्राक्षी शत्रुघ्नः सुभगाऽभवेत्।
सर्वा सख्योऽभवन्सद्यः पार्षदा हनुमन्मुखाः॥३३॥
तैस्तु साकं मुदा सर्वैः सीतारामौ सतां गती।
वहिरङ्गा शुभां लीलां चक्रतुः कल्मषापहाम्॥३४॥
(अध्याय ३६, श्लोक ३२, ३३, ३४)

अर्थः—श्री युगल सरकार के इस मनोभाव को जानकर श्रीचन्द्रकलाजी तत्क्षण स्वयं श्री भरतलालजी बन गयीं और और श्री लक्ष्मणाजी श्रीलखनलालजी हो गयीं॥३३॥

तत्पश्चात् श्री कललदल लोचना श्री सुभगाजी, श्री-शत्रुघ्नजी तथा और सभी सखियाँ श्रीहनुमन्तलालजी आदि पार्षद बन गयीं ॥३३॥

सन्तों के परम आधार स्वरूप वे श्रीसीतारामजी उन सब पार्षदों के सहित प्रसन्न होकर समस्त पापों का विनाश करने वाली वहिरङ्ग लीला करने लगे ॥३४॥

श्री कृपानिवासजी महाराज अपने 'अनन्य चिन्तामणि' नामक ग्रन्थ के 'रोग प्रहरन' नाम द्वितीय गुण में चारो भाइयों के प्राकट्य के सम्बन्ध में लिखते हैं :—

श्री दशरथउर पुत्र भाव धरि ।
यथा भाव बश सिद्ध करैं हरि ।।
भाव विवश भये चार कुमारा ।
नहिं जोनी गति रति संसारा ।।
प्रगट भये भक्तन सुख कारन ।
औ रसिकन को रस उपजावन ।।
चन्द्रकला ह्वै भरत सुहाये ।
विमला लषन मदन रिपु हाये ।।
श्री प्रसाद हनुमन्त सु पूरति ।
सियवल्लभ सुख साहस मूरति ।।

अपने प्रधान ग्रन्थ 'श्रीराम रसामृत सिन्धु' के प्रथम

प्रवाह के सप्तम तरङ्ग के अन्त में भी कृपा निवासजी महाराज लिखते हैं कि :—

चन्द्रकला विमला मदनकला, सखी अवतार ।
कैकेयी एक, सुमित्रा- युग, जनमें ता वार ॥

अर्थात् श्रीचन्द्रकलाजी के अवतार श्री भरतलालजी को श्री कैकेयीजी ने जन्म दिया तथा श्री विमला और मदन-कलाजी के अवतार श्री लक्ष्मण–शत्रुघ्नजी को श्री सुमित्रा जी ने जन्म दिये । इस तरह सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी और भरतलालजी को महाराज ने पूर्ण अभेद बताया ।

श्री लक्ष्मण कोटाधीश अनन्त श्री स्वामी युगलानन्य शरणजी (जो छोटे–बड़े-८४, चौरासी ग्रन्थों के निर्माता हैं) महाराज अपने 'श्री मिथिला-वाटिका विहार' नामक ग्रन्थ में (जिसमें श्री रामचरितमानस के फुलवाड़ी प्रसङ्ग का अर्थ महाराज ने लिखा है ।)

चली अग्रकरि प्रिय सखि सोई ।
प्रीति पुरातन लखे न कोई ॥

के अर्थ में लिखते हैं कि :—

'चली अग्रकरि प्रिय सखी'

ये सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जी हैं । अतएव, ये सखी

श्रौर श्री भरतलाल जी तत्व करके एक ही हैं श्रौर रूप करके भिन्न हैं। वाह्य सेवा के वास्ते श्री भरत रूप से हैं श्रौर महल सेवा के वास्ते श्रीचन्द्रकला रूप से हैं। जैसे स्वारथ परमारथ श्री भरतलालजी ने श्री सरकार में श्रर्पण किया है, इसी तरह से श्री चन्द्रकलाजी ने स्वारथ-परमारथ श्री स्वामिनीजी में अर्पण किया है। पुराणों में भी लिखा है कि :—

"भरतश्चन्द्रकला तथा।"

❀ श्लोक ❀

या च चन्द्रकला नाम्नी सर्व विद्या विशारदा।
सुदक्षा सर्व कार्येषु दम्पत्योः रसवर्द्धिका ॥५२॥
वाह्य कार्येषु प्राधान्यं भरतस्य यथा मतम्।
तथान्तरङ्ग लीलासु श्रैष्ठ्यमस्या मनोरमे ॥५६॥

(लोमश संहिता, अध्याय-१५, श्लोक-५२-५६)

श्रर्थ—सर्व विद्या विशारदा सभी कार्यों में परम चतुरा दम्पति के रस सुख को बढ़ाने वाली श्री चन्द्रकला नाम की सखी हैं। वाह्य कार्यों में जैसे श्री भरतलालजी का स्वतन्त्र सर्वाधिकार है, अन्तरङ्ग लीलाश्रों में उसी प्रकार श्रीचन्द्रकलाजी का है ॥५६॥

परमहंस श्री सियालालशरणजी महाराज :-

श्रीचन्द्रकला श्रीचारुसुशीला । यूथेश्वरी उभय मन मीला ।।
चन्द्रकला श्री भरत सुजाना । चारुशीला जानहु हनुमाना ।।

(श्री प्रेमलताकृत बृहद उपासना रहस्य, अष्टयाम प्रसंग)

श्री मैथिली प्राणवल्लभ प्राणप्यारी सर्वेश्वरी श्री-चन्द्रकलाजी में और श्री सीतारामजी के प्राण प्यारे श्री-भरतलालजी में ऐक्य देखिये :—

तुम जानहु कपि मोर सुभाऊ ।
भरतहिं मोहि कि अन्तर काऊ ।।"

(श्री रामचरित मानस)

श्लोक :—विदेहात्मजयाऽद्वैत भावमेषा गमिष्यति ।

(लोमश स० अ० १७, श्लोक ४३)

अर्थ:—श्री मैथिलीजी से ये श्री चन्द्रकलाजी अद्वैत भाव को प्राप्त होंगी अर्थात् किसी तरह का भेद नहीं है।

राम प्राणहु ते प्राण पियारे। तुम रघुपतिहि प्राणते प्यारे ।

(रा० च० मा०)

श्लोक :—

एषाहि सर्वशक्तीनामीश्वरी गुण मण्डिता ।
प्राणैः प्रियतरा नित्यं श्री सीतारामयोः सदा ।।६।।

(लो० स०, अ० १६, श्लोक ६)

अर्थ :—सर्व शक्तियों की ईश्वरी सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जो श्री सीतारामजी की नित्यप्राणों से प्रियतरा हैं ॥६॥

"सुनहु भरत रघुपति मन माँही।
प्रेम पात्र तुम सन कोउ नाहीं ॥

श्लोक:—

मैथिली प्रीति पात्रत्वात् वैलक्षण्याच्च सर्वतः।
चक्रवर्ति कुमारोपि तस्याः साह्यमपेक्षते ॥५५

अर्थः—सभी बातों में विलक्षण तथा श्रीराजकिशोरी जी की परम प्रीति पात्रा होने के नाते श्रीराघवेन्द्र कुमार भी समय-समय पर इनकी सहायता की चाहना करते हैं।

भरत महा महिमा सुनु रानी।
जानहिं राम न सकहिं वखानी ॥"

(रा० च० मा०)

श्लोक :—

किं वहुक्तेन ते देवि यथार्थं वच्मि तत्वतः।
अस्याः प्रभावं माहात्म्यं रामो वेत्ति न चापरः ॥

(ली० सं०, अ०–१५, श्लोक-५७)

अर्थ—विशेष क्या? हे देवि! इनका प्रभाव और माहात्म्य श्री राघवेन्द्रजू ही जानते हैं दूसरा कोई पूर्णतः नहीं जानता।

सर्व प्रधान परिकरों की वन्दना में श्री मद्गोस्वामीजी ने सर्वप्रथम सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी से अभेद श्री भरत-लालजी की ही वन्दना की है।

वन्दौं प्रथम भरत के चरणा।
जासु नेम ब्रत जाहि न वरणा॥
रामचरण पङ्कज मन जासू।
लुब्ध मधुप इव तजहिं न पासू॥
(रा० च० मा०)

कौशिल्या अम्बा श्री भरत कुमार के प्रति कह रही हैं -

राम प्राणहू ते प्राण पियारे।
तुम रघुपतिहिं प्राण ते प्यारे॥

पुनः माता, मन्त्री, गुरू और पुर नर-नारी सब स्नेह में विकल हो कहते हैं :-

भरतहि कहहिं सराहि सराही।
राम प्रेम मूरति तनु आही॥

श्री भरद्वाजजी की उक्ति श्री भरतजी के प्रति :-

सुनहुं भरत रघुवर मन माहीं।
प्रेम पात्र तुम सम कोउ नाहीं॥
तुम तो भरत मोर मत येहू।
धरे देह जनु राम सनेंहू॥

प्राण प्रीतम श्री रघुनन्दनजू का वचन श्री लखनलाल जी के प्रति :-

सुनहु लखन भल भरत सरीसा ।
विधि प्रपञ्च मँह सुना न दीसा ।।

और भी कहा गया है :-

"जो न होत जग जनम भरत को ।
सकल धरम धुर धरणि धरत को ।।
होत न भूतल भाव भरत को ।
सचर अचर चर अचर करत को ।"

श्री मिथिलेशजी महाराज श्री सुनयना अम्बा के प्रति चित्रकूट में कहते हैं :-

सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि ।
भरत कथा भव बन्ध विमोचनि ।।
अगम सनेह भरत रघुवर को ।
जँह न जाय मन विधि हरिहर को ।।
भरत महा महिमा सुनु रानी ।
जानहिं राम न सकहिं बखानी ।।
साधन सिद्धि राम पग नेहू ।
मोहि लखि परत भरत मत येहू ।।

"यह जलनिधि खन्यौ मथ्यौ बाँध्यौ अँचयौ है ।

तुलसीदास रघुवीर बन्धु महिमा को सिंधुतरि को
कवि पार गयो है ॥"

अर्थ :--कवि कुल तिलक प्रात: स्मरणीय श्री मद्गोस्वामी जी महाराज कहते हैं कि इस समुद्र को सगर के पुत्रों ने तो खन लिया, देवताओं ने मथ लिया, हनुमानजी लाँघ गये, रघुनाथजी ने बाँध लिया और अगस्त्यजी पी गये, परन्तु, श्री रघुवीर बन्धु श्री भरतलालजी की महिमा के समुद्र को किन कवि की बुद्धि ने पार किया है ?

अर्थात् अगम्य है। इस प्रकार सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी से अभेद श्री भरतलालजी की महिमा का कौन वर्णन कर सकता है ?

कारण, श्री भरत-तत्त्वब्रह्म तत्त्व है जो वेद, से भी सिद्ध है। (देखिये, पं० श्री रामकुमार दास जी (मणिपर्वत) लिखित 'वेदों में रामकथा')।

पुनः— ॥ श्लोक ॥

चतुर्धा च तनुं कृत्वा देव देवो हरिस्स्वयम् ।
अत्रैव रमते नित्यं भ्रातृभिः सह राघवः ॥

(स्कन्द पुराण, अयोध्या माहात्म्य)

अर्थात् देवाधिदेव स्वयं परब्रह्म चार विग्रह बनाकर अपने भाइयों के सहित श्रीराघव इसी अयोध्या में नित्य रमण करते हैं।

तस्यापि भगवानेष साक्षाद् ब्रह्ममयो हरिः ।
अंशांशेन चतुर्धागात पुत्रत्वं प्राथितः सुरैः ।।
श्रीमद् भागवत-६ । १२ । २

अर्थात् परब्रह्म ही देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर अंशांश भेद से चार विग्रह बनाकर श्रीदशरथनन्दन के रूप में प्रगट हुए ।

अंसन्ह सहित मनुज अवतारा ।
लैहौं दिनकर वंश उदारा ।।
(श्री रामचरित मानस, बालकांड)

राज्ञो दशरथस्य त्वमयोध्यापतिर्विभो ।
धर्मज्ञस्य वदान्यस्य महर्षि सम तेजसः ।।
अस्य भार्यासु त्रिसृषु ह्री श्रीकत्युपमसुचा ।
विष्णो पुत्रत्व मागच्छ कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ।।
श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण-१ । १६ । २०

ततः पद्म पलाशाक्षः कृत्त्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ।
पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम् ।।
वहीं-१।३१।३२

अर्थात् अयोध्याधिपति महाराज श्रीदशरथजी बड़े धर्मज्ञ, उदार महर्षि समान तेजस्वी थे। उनकी ह्री,

श्री, कीर्ति तुल्य तीनों रानियों से स्वयं ब्रह्म ही अपने को चार रूपों में विभक्त कर पुत्र रूप में प्रगट हुए। तदुपरान्त कमल दल लोचन प्रभु ने अपने को चार रूपों में प्रगट कर अपने पिता महाराज दशरथ को सुख दिया।

स्वयं परब्रह्म स्वरूप होने से श्रीभरतलालजू का ऐश्वर्य, प्रताप, बल, शक्ति आदि स्वयं सिद्ध हैं, किन्तु श्री हनुमदादि पार्षदों के उपर्युक्त धर्म व्रह्म प्रदत्त हैं।

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी से अभिन्न महामहिम श्री-भरतलालजी को श्रीहनुमानजी का दास कहना स्वयं श्री-हनुमानजी का ही कितना वड़ा अपराध है यह तो पाठक ही विचार करेंगे कि जिन श्री भरतलालजी के प्रति श्री-हनुमानजी का कैसा उपास्य भाव है? देखिये, श्रीहनुमान जी की उक्ति श्री भरतलालजी के प्रति :—

मारुत सुत मैं कपि हनुमाना।
नाम मोर सुनु कृपानिधाना॥
तब हनुमन्त नाय पद माथा।
कहे सकल रघुपति गुनगाथा॥

श्री रामायणजी के पात्रों में युगल सरकार भगवान श्रीसीतारामजी को छोड़कर सर्वाधिक विशिष्ट पात्र श्री-

भरतलालजी ही हैं। प्रायः समस्त रामायणी जगत का यह सर्व मान्य सिद्धान्त है।

जानकी शरण और रामटहल शरण (गुरु-चेला) ही ऐसी कल्पनातीत मूर्खतापूर्ण श्री हनुमानजी की भक्ति का ढोल पीटते हैं तो इस अन्याय के लिये तो स्वयं श्री हनुमानजी और पाठक ही विचार करेंगे। और कहा ही क्या जा सकता है ?

हमारे मत से तो यही सिद्ध होता है कि जैसे कोई अपनी अन्ध-भक्ति के आवेश में अपने उपास्य के माथे पर डण्डा रखने में तो संकोच न करे, परन्तु, चरणों की पूजा करे। मधुकरिया गुरु-चेले की ऐसी सद्असद् विवेचनी बुद्धि को नमस्कार है।

वैसे हनुमानजी के यश का जितना ही वर्णन किया जाय थोड़ा होगा। कारण, भगवान श्रीसीतारामजी के दरबार के ये प्रधान पार्षद हैं तथा भगवान श्रीसीतारामजी सपरिवार के ये दुलरुआ हैं। इनकी सेवायें ही कुछ ऐसी हैं कि सबों की रीझ इनके प्रति अनोखी है और यही कारण है कि देश-विदेश सब जगह श्री हनुमानजी की भक्ति का प्रचार प्रसार है। श्रीराम-परिवार इनकी सेवा से रीझे हुए हैं।

इसलिये रामानन्द सम्प्रदाय और इसका रसिक सम्प्रदाय इनका अत्यधिक आदर करते हैं। इसमें कतई दो मत नहीं है। परन्तु, मूर्ख मधुकरिया जानकीशरण और बेवकूफ इसके अनुयायी निराधार चर्चाकर सम्प्रदाय के एक वर्ग विशेष पर हनुमान द्रोह का आरोप लगाकर समाज में विष वमन करते हैं।

इन मूर्खों को यह ज्ञान नहीं है कि सेवक श्रीहनुमानजी को सेव्य श्रीरामपरिवार का भी स्वामी घोषित करने से क्या हनुमानजी प्रसन्न हो जाँयगे ? और जो वर्ग श्रीराम परिवार (भरतादि) का स्वामी हमुमानजी को नहीं कबूल करेगा, क्या वह हनुमान द्रोही कहायगा ? इस मूर्खता के लिये एक कहानी याद आती है कि एक स्वामी भक्त मूर्ख बन्दर ने स्वामी की नाक पर बैठी हुई मक्खी को उड़ाने के लिये पत्थर मारकर स्वामी की नाक ही समाप्त कर दी। 'वैराग्य-ज्योति' आदि पत्र पत्रिकाओं में मधुकरिया और इसके मूर्ख अनुयायियों के लेखों में (देख लीजिये, वैराग्य ज्योति, अङ्क ११। १९८३ ई० शीर्षक आद्याचार्य हनुमान) इन सबों का उद्घोष है कि परब्रह्म स्वरूप भरतादि के भी आचार्य श्री हनुमानजी ही हैं और इसके लिये प्रमाण में श्री हनुमानजी की उक्तिः—

"नाथ भरत कछु पूछन चहहीं।
प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं ॥"

उपस्थित करते हैं। यदि यही आचार्यत्व का प्रमाण हो तो "मारुति मन, रुचि भरत को लखि लखन कही है।" (विनय-पत्रिका, पद-२७९) के मुताबिक हनुमानजी के भी आचार्य-श्रीलखनलालजो हो गये तो फिर हनुमानजी का आचार्यत्व कहाँ गया ?

हनुमानजी की उक्ति के उत्तर में भगवान श्रीराम के उत्तरः-

"तुम जानहु कपि मोर सुभाऊ।
भरतहि मोहि कछु अन्तर काऊ ॥"

के लिये ये सब अन्धे बहरे हैं। श्री रघुनाथजी ने श्रीभरतजी को अपने से अभिन्न बताया। फिर श्रीरामतत्त्व भरतको हनुमानजी से निम्न कोटि के मानने की कल्पनातीत मूर्खता बुद्धि का दुश्मन मधुकरिया या मधुकरिया का समाज ही कर सकता है।

इन मूर्खों का अकाट्य प्रमाण है कि प्रभु आगमन संदेश सुनाकर श्री हनुमानजी श्री भरतलालजी के आचार्य हो गये। इस तरह तो सरकार का संवाद श्री किशोरीजी को और श्री किशोरीजी का संवाद सरकार को सुनाकर श्री-भरतलालजी सहित अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीसीतारामजी के भी गुरु (स्वामी) श्री हनुमानजी हो

गये और श्रीराम परिवार श्रीहनुमानजी के दास (शिष्य) हुये। मूर्ख मधुकरिया समाज की क्या अनोखी हनुमान भक्ति है। श्रीराम कथा तो किन्हीं से भी सुनी जाती है। अगस्त्यजी से स्वयं भगवान श्रीराम तथा पुत्र सनकादि से ब्रह्माजी भगवत कथा सुनते थे।

भगवान शंकर के उपदेश से गरुड़जी ने काग-भुसुण्डि से रामकथा सुनी तथा स्वयं भगवान शंकर बहुत दिनों तक कागभुसुण्डिजी से कथा सुनते रहे। काग-भुसुण्डजी श्रीराम कथा के स्थायी व्यास बने हुए हैं? श्रीहनुमानजी ने सम्पाती से बड़ी लम्बी चौड़ी कथा सुनी है। श्रीविभीषणजी के निर्देश से श्रीकिशोरीजी के दर्शन किये। अभी भी गन्धमादन पर्वत पर अप्सराओं से श्रीराम गीत सुनते हैं और रामलीला के दर्शन करते हैं तो मधुकरिया समाज को छोड़कर और कोई कहाँ किसी को श्रीहनुमानजी के आचार्य (गुरु), व्यास या स्वामी मानता है। मूर्खता की भी कोई सीमा होती है। सेवक की मर्यादा-शोभा सेवक बने रहने में है, न कि स्वामी बनने में और स्वामी की स्वामी वने रहने में। श्रीरामदरबार में युगल सरकार भगवान श्रीसीतारामजी को छोड़कर सर्वोच्च स्थान महामहिम श्रीभरतलालजी का ही निर्विवाद रूप से मान्य है। तत्त्व और मर्यादा के

हिसाब से किसी और विचार का कतई अवकाश नहीं। इसीलिये, परिकरों में प्रथम बन्दना इन्हीं की है :—

"वन्दौं प्रथम भरत के चरणा।
जासु नेम ब्रत जाइ न वरणा ॥"
"भरत महामहिमा सुनु रानी।
जानहिं राम न सकहिं बखानी ॥"
"भरत सरिस को राम सनेही।
जग जपु राम राम जपु जेही ॥"
"अगम सनेह भरत रघुवर को।
जँह न जाय मन विधि हरिहर को ॥"
"भरत महा महिमा जल रासी।
मुनि मति ठाढ़ि तीर अवलासी ॥"
"विधि हरि हर कवि कोविद भारी।
तेउ न भरत मति सकेउ निहारी ॥"

श्रीभरत तत्त्व के प्रमाण में श्रीगीतावलीजी का उद्धरण :—

प्रसङ्ग :—लंका काण्ड में सञ्जीवनी बूटी सहित पर्वत लिये हुये श्रीहनुमानजी का आना :—

कौतुक ही कपि कुधर लियो है।
चल्यो नभ नाइ माथ रघुनाथहिं,
सरिस न वेग वियो है ॥ १ ॥

देख्यो जात जानि निसिचर,
विनु फर सर हयो हियो है।
पर्‌यो कहि राम, पवन राख्यो गिरि,
पुर तेहि तेज पियो है ॥ २ ॥
जाइ भरत भरि अङ्क भेंटि निज,
जीवन दान दियो है।

(लंका काण्ड, पद-१०)

(अब पर्वत लाते समय मार्ग में जो घटना हुई उसका वर्णन करते हैं :—) हनुमानजी ने खेल में ही पर्वत उठा लिया और श्रीरघुनाथजी को माथा नवाकर आकाश मार्ग से चल दिये। उस समय उनके समान और किसी का वेग नहीं था ॥१॥ उन्हें (अयोध्या के ऊपर) जाते देख भरतजी ने राक्षस जानकर बिना गाँसी का वाण मारा। तब वे 'राम' ऐसा कहते हुए गिर पड़े। पवन देव ने (अयोध्या की रक्षा के लिये) पर्वत को रोक लिया, मानो नगर ने उनका तेज पी लिया हो ॥२॥ तब श्रीभरतलालजी ने (उनके मुख से श्रीराम नाम सुन) उनके समीप जा भुजाओं में भरकर उनका आलिङ्गन किया और उन्हें जीवन दान दिया :—

भरत शत्रुसूदन विलोकि कपि चकित भयो है।
राम लषन रन जीति अवध आये कैधौं मोहि भ्रम,

कैधौं काहू कपट ठ्यो है ॥ १ ॥
प्रेम पुलकि पहिचानि, कै, पद पदुम नयो है।
कह्यो न परत जेहि भाँति दुइ भाइन सनेह सों
उर लाइ लयो है ॥ २ ॥
समाचार कहि गहरु भो तेहि ताप तयो है।
कुधर सहित चढ़ौ विसिष, वेगि पठवौं,
सुनि, हरि हिय गरब गूढ़ उपयो है ॥ ३ ॥
तीर तें उतरि जस कह्यो चहै, गुन गननि जयो है।
धनि भरत ! धनि भरत ! करत भयो
मगन मौन रह्यो मन अनुराग रयो है ॥४॥
यह जलनिधि खन्यो, मथ्यो, लँघ्यो, बाँध्यो, अँचयो है।
'तुलसीदास' रघुवीर बन्धु महिमा।
को सिंधु तरि को कवि पार गयो है ॥५॥

(लंका काण्ड, पद-११)

अर्थ :—श्रीहनुमानजी श्रीभरतजी और शत्रुघ्नजी को देखकर वड़े विस्मित हुए। वे सोचने लगे—क्या राम और लक्ष्मण युद्ध में विजय प्राप्त कर अयोध्या में आ गये हैं या मुझे भ्रम हो रहा है ? अथवा यह किसी ने कपट किया है ॥१॥ फिर उन्हें पहचान कर उन्होंने प्रेम से पुलकित हो उनके चरण कमलों में माथा नवाया। उस समय उन्हें दोनों भाइयों ने जैसे प्रेम से हृदय

लगाया, वह कहा नहीं जाता ॥२॥ फिर उन्हें सारे समाचार सुनाकर कहा 'मुझे विलम्ब हो रहा है।' वे सब बातें सुनकर श्रीभरतजी दुःख से संतप्त हो गये और बोले—'तुम पर्वत सहित मेरे वाण पर चढ़ जाओ, मैं तुरन्त ही तुझे श्रीरघुनाथजी के पास भेज देता हूं।' यह सुनकर हनुमानजी के हृदय में कुछ गर्व का अंकुर हो आया (जो उचित नहीं था) ॥३॥ वे उनके बाण पर चढ़े और और फिर लज्जित हो उतर कर उनका सुयश गान करने लगे। 'भरतजी भन्य हैं' धन्य हैं' इस प्रकार कहते हुए प्रेम मग्न हो गये ॥४॥ गोस्वामीजी कहते हैं—इस समुद्र को सगर के पुत्रों ने खोदा है, देवता—दैत्यों ने मथा है, हनुमानजी ने लाँघा है, नल-नील ने बाँधा है और अगस्त्यजी ने पीया है, किन्तु, श्रीरघुनाथजी के भाई श्रीभरतजी की महिमा के समुद्र का भला कौन कवि पार पा सकता है ॥५॥

हो तो नहिं जौ जग जनम भरत को।
तौ कपि कहत, कृपान धार मग
चलि आचरत वरत को ॥१॥
धीरज धरम धरनि धर धुरहूँ
ते गुर धुर धरनि धरत को।
सब सदगुन सनमानि आनि उर

अघ औगुन निदरत को ॥२॥
सिवहु न सुगम सनेह राम पद
सुजननि सुलभ करत को ।
सृजि निज जस सुरतरु तुलसी
कँह अभिमत फरनि फरत को ॥३॥
(लंका काण्ड, पद-१२)

अर्थ :—हनुमानजी कहते हैं—यदि संसार में श्रीभरतजी का जन्म नहीं हुआ होता तो तलवार की धार प्रेमव्रत का कौन पालन करता ॥१॥ पृथ्वी में पर्वतों के भार से भारी धैर्य और धर्म का भार कौन उठाता ? सब सद्गुणों को हृदय में धारण कर कौन पाप और अवगुणों का निरादर करता ? शंकर भगवान के लिये भी दुर्लभ श्रीरामप्रेम को सबों के लिये कौन सुलभ करता ? तथा अपने सुयश रूप कल्प बृक्ष को उत्पन्न कर कौन तुलसीदास के लिये अभिमत फल प्रदान करता ॥३॥

श्रीहनुमानजी की उक्ति श्रीभरतलालजी के प्रति :—

दोहा :—

तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरन्त ।
अस कहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत ॥६० (क)॥

भरत बाहुबल शील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार।
मन मँह जात सराहत, पुनि-२ पवन कुमार ॥६०(ख)॥
(श्री रा० च० मा०, लंका काण्ड)

राम प्रानप्रिय नाथ तुम्ह, सत्य वचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि, हरष न हृदय समात ॥२(क)॥

सोरठा :—

भरत चरन सिर नाइ, तुरत गयउ कपि राम पहँ।
कही कुशल सब जाइ, हरषि चलेउ प्रभु यान चढ़ि ॥२(ख)॥
(श्री रा० च० मा०, उत्तर काण्ड)

श्लोक :—

तं धर्म मिव धर्मज्ञं देहबन्ध मिवापरम् ॥३५॥
उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं हनूमान् मारुतात्मजः।
(श्रीमद्वाल्मीकीये आदि काव्ये युद्ध काण्डे पञ्चविंशत्य-
धिक शततमः सर्गः ॥१२५॥

अर्थः—मनुष्य देह धारण करके आये हुए दूसरे धर्म की भांति उन धर्मज्ञ भरत के पास पहुंचकर पवनकुमार श्रीहनुमानजी हाथ जोड़ कर बोले ॥३५॥

इतने के बाद भी श्रीभरतलालजी और श्रीहनुमानजी का स्वामी-सेवक भाव यदि किसी के लिए सन्दिग्ध ही बना रहे तो कहना पड़ेगा कि—

सो०—फूले फरे न बेंत, यदपि सुधा बरिसहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जौं गुरु मिलहिं विरंचि सम ॥

फिर श्रीभरतलालजी को हनुमानजी के दास कहने वाले एवं हनुमानजी को श्रीभरतजीके आचार्य कहने वाले पागलों को अपने विकृत मष्तिष्क के उपचार की आवश्यकता नहीं है तो और क्या ?

यह तो हुई श्रीभरत तत्त्व की बात। अब श्रीभरत लालजी की भी अवतारिणी श्री मिथिलेश राजकिशोरीजू की अङ्गभूता अभिन्ना सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी को क्या रसाचार्या बनने का अधिकार नहीं हो सकता ? श्रीहनुमानजी तो वाह्य और अन्तरङ्ग रूप से भक्तों के ऊपर कृपा करने वाले माने ही जाते हैं, परन्तु, अपने अनुयायियों के सहित विद्वान मधुकरिया को तीक्ष्ण बुद्धि में श्री भरत आदि विशिष्ट परिकरों को भक्तों के ऊपर कृपा करने का कोई अधिकार नहीं। ऐसे प्रणम्य देवता थोड़े ही होते हैं।

मधुकरिया ससमाज इस बात को लेकर बहुत उछलता कूदता है कि स्वामी श्रीयुगलानन्य शरणजी महाराज ने अपने युगल 'विनोद विलास' नामक ग्रन्थ में:-

नित्य सुपरिकर वृन्द बीच राजत हौ संतत।
नाम ललित मुद मिलित चारुशीला सत संपत ॥

यूथेश्वरी प्रधान निकर परिकर पद पूजितं ।
युगल विलास विचित्र विमल वानी कल कूजित ।।१४।।
कहा हैं। (अध्याय-१-छन्द-१४)

यह ग्रन्थ श्रीहनुमत संहिता का भावानुवाद है। इसमें श्रीहनुमानजी वक्ता हैं और श्रीअगस्त्यजी श्रोता हैं। ये श्री हनुमानजी श्रीचारुशीलाजी के रूप में श्री राघवेन्द्र सरकार के पक्ष की प्रधान यूथेश्वरी माने ही जाते हैं जो अपने परिकरों से पूजित हैं तो इसमे आकाश पाताल इकट्ठा करने की क्या बात ?

देखिये, इसी ग्रन्थ में :—

अष्टोत्तर सत महा मुख्य माधुरी मगन मन ।
यूथेश्वरी प्रधान प्राण प्रीतम प्रमोद तन ।।
एक एक सहचरी संग सत सहस दासिगन ।
संतत सुचि सुकुमारि सरस सेवा तत्पर मन ।।
(अध्याय-३, छन्द-८८)

तो किसी एक यूथेश्वरी में सर्वाधिक प्रधानता कहाँ सिद्ध होती है ?

पुन :—

बनज सुदल वर वीच बसहिं विलसहिं विनोद जुत ।
षोड़स सखी प्रधान नाम सुनिये अति अद्भुत ।।

उज्ज्वल रस रंग रंगी प्रीतम रहस्य नित ।
जिनहिं अपर नहिं काज सतत सेवा सरसत चित ।।४८।।
सुधामुखी सुख सदन उज्वला कलित कांचनी ।।
चित्रा चित्र विचित्र चरित उत्साह सांचनी ।
श्रीचन्द्रकला कमनीय कला कुशला कमला अति ।।४९।।
(अध्याय-५, ४८, ४९)

यही इन सबों की बुद्धि का दिवालियापन है। श्रीराम मंत्र प्रचारक श्रीहनुन्तलालजू माने ही जाते हैं। परन्तु, परमगोप्य श्रीयुगल मन्त्रराज प्रचारक श्री-भरतलालजी अथवा इनसे अभिन्न सर्वेश्वरी श्रीचन्द्र-कलाजी हैं तो क्या भक्ति देश :में (रसदेश में) श्रीहनु-मानजी को छोड़ और किन्हीं पार्षद विशेष की कृपा की आवश्यकता ही नहीं मानी जाय ? और नहीं तो शास्त्र, पुराण, संहिता तथा समस्त पूर्वाचार्यों की वाणियों को तुम मूर्खानन्दों के कहने के मुताबिक मिटा दिया जाय और नये सिरे से तुम्हारे जैसे गढ़े जाँय। परन्तु, गढ़ते गढ़ते भी तुम सबों की कई पीढ़ियाँ बीत जाँयगी। तब तक न जाने क्या होगा।

मधुकरिया और इसके चेलेचाटी कहते हैं कि कलियुगी लोग ७०-८० वर्षों के प्रमाण लावें, मालूम पड़ता है, ये सब लोमशजी के नाती पोते हैं और इनके प्रमाण अनादि

कालीन हैं और दूसरे के अर्वाचीन हैं।

यदि एक पक्ष (श्रीचन्द्रकलानुयायी) के प्रमाण अर्वाचीन निराधार माने जाँय तो दूसरे पक्ष (श्रीचारुशीलानुयायी) के प्राचीन और साधार माने जाने के क्या सबूत ? क्या एक पक्ष के प्रमाण के लिये स्वयं ब्रह्मा-शंकर साक्ष्य दे रहे हैं और दूसरे पक्ष के लिये नहीं। पागलों की इसी तरह की बे सिर पैरों की बातें हुआ करती हैं।

यदि श्रीहनुमानजी के ही चार या चार से अधिक रूप माने जाँय, जैसे-श्रीहनुमानजी, श्रीचारुशीलाजी, श्री प्रसादाजी, श्री पद्माजी तथा और तो दूसरे विशिष्ट पार्षद के लिए ऐसा न मानना, बदमाशी और वेवकूफी छोड़कर और क्या कहा जा सकता है ?

मधुकरिया समाज की मान्यता के मुताबिक श्री प्रसादाजी, श्रीकिशोरीजी के पक्ष की प्रधाना तथा श्रीचारुशीलाजी, श्रीरघुनन्दनजू के पक्ष की प्रधाना हैं तो इस न्याय से भी नायिका पक्ष की प्रधानता होने के कारण विशेषता श्री प्रसादाजी में हुई। फिर श्रीचारुशीला नाम का इतना ढोल क्यों पीटा जाता है ? सर्वेश्वरी श्रीप्रसादाजी को कहना चाहिए और जिनका प्राकट्य निमिवंश में सिद्ध करने के लिए मधुकरिया को

नये ग्रन्थ की रचना करनी चाहिये जो करता ही होगा।

मधुकरिया पक्ष इस बात का भी बहुत प्रचार करता है कि चन्द्रकलानुयायी हनुमान-द्रोही होते हैं। यदि सत्य का गला न घोंटा जाय तो कोई भी कह सकता है कि किला, गोला, हनुमत निवास आदि अयोध्या (चन्द्रकलानुयायी) जिस भाव-भक्ति पूर्वक हनुमज्जयन्ती आदि महोत्सव मनाते हैं और अनुष्ठानादि करते कराते रहते हैं, उस अनुपात में मधुकरिया अपने अनुयायी समेत ये सब उत्सव नाममात्र को ही कर पाते हैं। तब इतना है कि चन्द्रकलानुयायी—अपने विवेक को ताक पर रख, शास्त्र, पुराण, संहिता तथा प्राचीन आचार्य वाणियों की अवहेलना कर, मूर्ख मधुकरिया समाज की उटपटाङ्ग बातें मान पाप करने के लिए प्रस्तुत नहीं, तो इसीलिए मधुकरिया समाज के कोप-भाजन बने हुए हैं। मधुकरिया समाज का यह पापपूर्ण दुराग्रह त्रिकाल में भी मान्य नहीं होगा। बल्कि, अपने पापाचार से वह स्वयं नष्ट हो जायगा। विशेष के लिए तो निष्पक्ष मध्यस्थ ही विचार करेंगे कि कौन उचित या अनुचित मार्ग ग्रहण किये हुए हैं। विशेष क्या कहा जाय ?

—:०:—

७-श्रीचन्द्रकलाजी के सर्व कला विशारदत्व में प्रधान वीणा-वादनः—

सर्व विद्या विशारदा होने से आप सर्व कलाओं की आचार्या हैं, फिर भी श्री प्रिया प्रीतमजू के रास विलास में आप की प्रधान सेवा वीणा वादन है जो शास्त्र सम्मत है।

वन्दे चन्द्रकलां देवीं वीणा वादन तत्पराम्।
रास वेश्मनि भावज्ञां जानकी प्रेम विह्वलाम् ॥१॥
(श्री नारद पंचरात्र, नारदोक्त चन्द्रकलाष्टक)

कुञ्जान्तरे चन्द्रकला वीणा वाद्यं मनोहरम्।
मोहनाय परेशस्य पञ्च वाणात्मकं परम् ॥३८॥
संगृह्य शीघ्रतो देवी रणत्कार ततोकरोत्।
दिशां च विदिशां चैव पूरयामास सा ध्वनिः ॥३९॥
स्वर्ग पाताल मेवं च भेदयित्वा जगत्त्रयम्।
चेतना चेतनांश्चैव वीणा शब्दो व्यमोह्यत् ॥४०॥
(लोमश संहिता, अ० २२,)

श्लोक :—

विष्णु वीज कृतां मालां यज्ञाङ्ग फल सम्भवाम्।
वशिष्ठेन समाक्षिप्तां जानकी तदा ॥२३॥
व्रह्म गोलक संघातं विभ्रतीव विराजते।

वीणां प्रवीणो भरतो वादयञ्जानकीं प्रति ।।२५।।

(महाभारत, अश्वमेधपर्व, अ० ७६, श्लोक-२४-२५)

महाभारतकार भगवान 'वेद व्यासजी' के वचन से भी यही सिद्ध होता है :—

अर्थः—श्रीवशिष्ठजी द्वारा अर्पण की हुई विष्णु वीज की माला तथा और मालाओं से मिथिलेश राजनन्दिनी श्रीजानकीजी ऐसी सुशोभित हो रही थीं, मानो ब्रह्माण्ड की शोभा समुदाय को जीत लिया हो और वीणा बजाने में निपुण श्रीभरतलालजी राजनन्दिनी श्रीजानकीजी के समीप वीणा बजाते हुए सुशोभित हो रहे थे ।।२४।।२५।।

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी अपने वाह्य श्रीभरतलाल जी के रूप में होते हुए भी अपनी सहज सेवा वीणा वादन श्रीराजकिशोरीजू के प्रति प्रदर्शित कर रही हैं।

अनन्त श्री अग्रस्वामीजी महाराजः—

सर्वाषां सुसखीनांतु प्रेरिकां गुण सागराम्।
जानक्याः परमप्रेष्ठां कोक विद्या विशारदाम् ।।१।।

रसिकानामाचार्यां तां वीणा वादन तत्पराम्।
दम्पत्योः केलिमर्मज्ञां वन्दे चन्द्रकलां सखीम् ।।२।।

पद :—

गावति चन्द्रकला सिय प्यारी, छवि छकि मतवारी।

वीण बजावति मधुरे स्वर सों, मधुर ताल सुठिकारी ।।
सुनि जागे सिय प्यारी प्रीतम आलस भरे खुमारी ।
... चन्द्रकला रुख पाइ 'अग्र अलि' यह सुख झांकति
झाँझरि द्वारी ।।

श्री सूर किशोरजी महाराज :—

जनकलली मधुरे स्वर गावैं ।
नई नई तान सुनावैं सहचरि, चन्द्रकला अलि वीन बजावैं ।।
... ...
'सूरकिशोर' वलैया लेहीं, कोउ सखि व्याह की बात चलावैं ।

श्री बाल अलीजी महाराज :—

दोहा :—

"रस विलसत प्रीतम सुखहिं, चिरनिशि चाह प्रवीन ।
चन्द्रकला चन्द्रहिं निरखि, मधुर यन्त्र स्वर कीन ।।"

(नेह प्रकाश)

श्री राम सखेजी महाराज —

नटत राम नागर-नागरिया ।
चन्द्रकला कल वीन बजावत गावत चन्द्रवती सहचरिया ।
......रामसखे दम्पति लोला रस लखि लखि दृगन प्रेम
उर भरिया ।।

श्री राम प्रिया शरणजी महाराज :—

(श्री सीतायन कार)

श्री नारदजी की उक्ति श्री जनकजी के प्रति :—

"चन्द्रकला जो वीन बजाई। सबके मन अभिलाष पुराई ॥
तँह मोहि वीन बजावन आई। चन्द्रकला मो कहँ सिखलाई ॥"

(श्री सीतायनजी, जयमालकाण्ड, चतुर्थ मधुरता)

श्री करुणा सिंधुजी महाराज :—

(स्वामी श्री रामचरण दासजी, प्रथम टीकाकार' श्री राम चरित मानस)

देखो सखि अति अनन्द रासरच्यौ
रामचन्द्र रजनी छबि छिटकि रही
शरद चांदनी।......चन्द्रकला वीणा
मुर्चङ्ग धुनि मृदङ्ग मधुर अपर
सखी सितार तार तर तरंगिनी।
......श्री रामचरण युत समाज
मेरे हिय में विराज यह विहार
नित अखण्ड रसिक मंडनी ॥

श्री युगल प्रियाजी महाराजः-

पद :—

भोरे श्रीचन्द्रकला अलबेली वीण बजावति प्यारी ।
विमलादिक निज कुंज कुंज तें आनि जुरी इकसारी ॥
विपुल थार लिये सेवा सौजनि कर कंजों में सुधारी ।
अग्र भाग श्री अग्र सहचरी, 'युगल प्रिया' बलिहारी ॥
जय श्री चन्द्रकला अलबेली ।
अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली ॥
निमि कुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रियकारी रसकेली ।
चन्द्रप्रभाजू के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली ॥
काँचन वन कमला प्रमोद वन लीला लहरि रिझेली ।
मोहनि यन्त्र वीन स्वर टेरति प्रीतम चित्त विथैली ॥
शरणागत पालिनि रस मालिनि चालिनि गज गति हेली ।
'युगल प्रिया' अनुराग सदा सम्बन्ध राग की मेली ॥

दोहा :—वीन बजाई चन्द्रकला, चन्द्रवतीजू गाय ।
कसी रसी गति मृदङ्ग, की परन प्रणाली छाय ॥

(श्री युगल प्रियाकृत शृङ्गार रस रहस्य दीपिका)

इसी ग्रन्थ में आगे फिर श्रीचन्द्रकलाजी के लिए लिखते हैं:-

"यन्त्र वर वीण कर धारी । रास रस मत्त मतवारी ॥

इस तरह सर्वकला विशारदा होती हुई भी प्रधानतः ये वीणाचार्या ही हैं ।

परिशिष्ट भाग :—

शास्त्रों के अतिरिक्त पूर्वाचार्यों की वाणियों में सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला-परत्त्व की एक झलक :—

(१) रस प्रवर्त्तक परमाचार्य अनन्त श्रीअग्र-स्वामी जी महाराज की वाणी :—

१—'गावति चन्द्रकला सिय-प्यारी, छवि छकि मतवारी ।।
वीण बजावति मधुरे स्वर सों, मधुर ताल सुठिकारी ।
सुनि जागे सिय प्यारी प्रीतम, आलस भरे खुमारी ।।
...चन्द्रकला रुख पाइ 'अग्र-अली' यह सुख झाँकति
झाँझरिद्वारी'

२—चली सब युग छबि हिय में धरी ।
सोय गये सखि पिय प्यारी अब आनन्द रस में भरी ।।
निज २ कुञ्ज की ओर गई सखि यूथेश्वरि सबरी ।।
सबसे मिलि संग चन्द्रकला थल 'अग्र' गई स्वथरी ।।

३- बजत बधाई रंग महल में प्रगटी 'चन्द्रकला सखि-अगरी । परमेष्ठी सखि जनक-लली की, सकल कला गुन में अति नगरी ।। इनके चरण-कमल आश्रित बिनु महल-वास सुख की नहिं चहरी । उमा रमा ब्रह्माणि आदि सब

दरशन हेतु खड़ी रह पवरी ॥ जाके विभव शेष नहिं कहि सक कहे एक मुख 'अग्र' कस करी ॥

४—प्यारी ओर चन्द्रकला, चारुशीला प्यारे ओर अंगन सुगंधमय सु उबटनो लगावती ॥… …
कोमल कर में सुधार उबटनो लै वार-२ दोऊन सखि हस्त 'अग्र' देती रस भावती ॥

(२) श्री नाभा स्वामी जी की वाणी :-

(अष्टयाम से)

आठ सखी जो मुख्य बखानी ।
तिनमें इक अति चतुर सयानी ॥४९॥
इक परदा भोतर सो गई । मंद-२ ध्वनि निर्तत भई ॥५०॥

ये सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी हैं, जिनको आगे स्पष्ट करते हैं:—

पुनि तहँ बैठि छिनक प्रभु बितयो ।
तब सिय चन्द्रकला तन चितयो ॥२८४॥

यही श्रीचन्द्रकलाजी श्रीनाभा स्वामीजी की आचार्या हैं । देखिये :—

"चन्द्रकला निज वाद्य सवाँरै ॥४८६॥
रस मंजरी सिंगार करि आई ।
अमित कला गुण निपुण सुहाई ॥४८७॥
करि प्रमाण तिन राग अलापी ॥४८८॥"

(३) श्री कृपानिवासजी महाराज की वाणी :-

(वर्षोत्सव, पदावली से)

१-रस-सागरि दोउ नवरंग रंग लै, सखीरी, नवल मिथिला-पुर धाम। ये हाँ नव अनुराग सुहागिन "चन्द्रकलादिक ओर।" प्यारी सहचरि संग लै, उमगि चली सिर मौर... ये हाँ, दुरिभाव सुसश्चनि अविचल रसथल पाल। कृपा-निवास उपासक भावनि जानकी-वल्लभ लाल ।।

२-युगल रसिक रस जुवा खेलैं। फरकति कृपा टहल सब सहचरि मणिगन मूठ परस्पर मेलैं। चन्द्रकला विमला दोउ शाहिद रौट जानि जिहि दिशि हँसि पेलैं। कृपा-निबास श्रीजानकी बल्लभ सुरति अमल बसि उठत अलेलैं ।।

(४) १-श्री बाल अली जी की वाणी :--

(नेह-प्रकाश से)

प्रिया-प्रीतम के सामने रास में सर्व प्रधान परिकर सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी अपनी बीणा को छेड़ती हैं :—

"रस विलसत प्रीतम सुखहिं, चिर निशि चाह प्रवीन।
चन्द्रकला चन्द्रहिं निरखि, मधुर यन्त्र स्वर कीन ।।"

२—(दूसरे ग्रन्थ-ध्यान मंजरी से)

श्री विमला अरु चन्द्रकला चन्द्रा पुनि पद्मा। माध्वी

कर्पूराङ्गी सिता असिता सुख सद्मा ।।२४८।। इनहिं आदि दै दलनि मुदित सोहत सखि श्रेनी । सेवहिं युगल-किशोर अमल पंकज दल नैनी ।।२४९।।

(५) रामसखेजी की वाणी :--

१—नटत राम नागर-नागरिया ।

चन्द्रकला कल वीन बजावत गावत चन्द्रवती सहचरिया ।। ... ... 'राम सखे' दम्पति-लीला रस लखि-२ दृगन प्रेम उर भरिया ।।

२—मिलि जेंवत प्रीतम संग सिया दोउ मंगल मोद बढ़ावै हो । कौर परस्पर देत चन्द्र-मुख मंद-मंद मुसुकावैं हो ।। श्रीचन्द्रकला सखि झाड़ो लिये कर सरयू जल अँचवावै हो । राम सखे प्रभु थार प्रसाद रह्यो अवशेष सु पावै हो ।।"

(५) श्री श्याम-सखेजी की वाणी :--

१—"चित्रकूट चम्पक-लता, चामीकर तरु-छाँह ।
चन्द्रकला विहरैं धरैं, श्याम सखे गलबाँह ।।"

२—'ठाकुर से मेरो ध्यान लगोरी ।। ठाकुर दशरथ—लाल हमारे, ठकुराइन मिथिलेश-किशोरी । बैठे कुन्ज धरे गलबहियाँ चन्द्रकला विमला चहुंओरी ।। 'श्याम सखे' दम्पति छबि निरखत पिय-प्यारी की सुन्दर जोरी ।।"

(७) श्री करुणा-सिंधुजी महाराज :--

(अष्टयाम से प्रातःकाल प्रधान सेवा में)

१—"जागु-३ श्याम जानकी बिहारी।···उज्जला-प्रहंसी-हंसी चन्द्रा चन्द्रकला बिद्युलतादि सखि मुख पोछत पट धारी ॥ जागे करुणा निधान निज निज कृत सखि सुजान 'राम चरण' दम्पति पर तन मन सखि वारी ॥"

२—देखो सखि अति अनन्द रास रच्यौ रामचन्द्र रजनी छबि छिटकि रही शरद चाँदनी।···चन्द्रकला बीणा मुर्चङ्ग धुनि मृदङ्ग मधुर, अपर सखि सितार तार तर तरंगिनी।···श्रीराम चरण युत समाज मेरे हिय में विराज यह विहार नित अखंड रसिक-मंडनी ॥"

(८) श्री मधुरअलीजी की बाणी :--

१—सजि सिय-पिय झूलन आये।
श्याम-गौर मनहरन सुभग अति सरस सनेह सुहाये ॥
चन्द्रकला सुभगादि अली गन संग समाज वनाये।
मधुरअली विलसत प्रमोद बन लखि रति मदन लजाये ॥

२—दोउ क्या झूलत झमक झुलनवाँ ॥
···चन्द्रकला सुभगादि अलीगन आनन्द भरी उमगवाँ ॥
···मधुरअली दम्पति सुखमानिधि ऐसे मन के हरनवाँ ॥

(६) श्रीज्ञानाअलीजी की वाणी :—

(सियवर केलि पदावली)

१—सोय जगी सिय सहचरि प्यारी ।
उत्थापन सुख समय जानि मन
सेवा सजग सबै सुकुमारी ।।
चन्द्रकला-विमला कमला अलि,
चारुशीलादिक सौज तैयारी ।
...गाय गाय गुणरूप माधुरी,
राग श्री स्वर सरस सुधारी ।।
ग्राम तीन मूर्छना सप्त स्वर,
'ज्ञानाअलि' सितार लयकारी ।।

(पद सं० ३६१)

२—शरद निशि चांदिनी छबि छाई ।
रहस रच्यो श्रीजनक नन्दिनी रघुनन्दन रुख पाई ।।
चन्द्रावति, चन्द्रकला, सुभगा, चन्द्रानिनि अरु चारुशीलादिक
सहचरि जुरि आई ।।...ज्ञानाअलि नृप ललन नवल संग
नित सुख सरसाई ।। (पद सं० १६२)

(१०) श्री रसमालाजी की वाणी :—

चन्द्रकला तिय नागरि बचन कहे सियहिं जनाय ।।
देखि सिये पिय मन ललचाय । ... ...

लेत तान स्वर ताल मिलाय।
'रसमाला' सखि बलि-बलि जाय ।।

(११) श्रीरसिकअलीजी महाराज की वाणी :-

('वर्षोत्सव से')

१—होरी खेलन लाईं सखियाँ सुघर सिखाय।
वारी जनक दुलारी लड़ैती सुखमा वरनि न जाय ।।
...चन्द्रकला कर दई पिचकारी रंग भरी सुख छाय।
प्रीतम दिशि चलाई प्यारी जब पिय रहे मुसुकाय ।।
...'रसिकअली' यह युगल केलि पर निरखि न नैन अघाय ।।

२—होरी खेलत राज दुलारी।
अपने पिया पर उमगि २ उर मारत रंग भरी पिचकारी ।।
चन्द्रकला विमलादि अग्र सखि इत उत शैन सजी है अपारी।
'रसिकअली' उतजय रघुबर पिय बोलत इत जय जनककुमारी।।

श्री रसिकअलीजी महाराज तो होली आदि ऐकान्तिक लीलाओं में सर्व प्रधान परिकर सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी को ही लिखते हैं (देख लीजिये, उन्हीं का ग्रन्थ होलिका-विनोद)

(१२) श्रीयुगल-प्रियाजी महाराज की वाणीः....

१-'भोरे श्रीचन्द्रकला अलबेली वीणा बजावति प्यारी।
विमलादिक निज कुंज कुंज तें जुरि आईं इक सारी ।।...

विपुल थार लिये सेवा सौजनि कर कजों में सुधारी। अग्र भाग श्री अग्र सहचरी युगल प्रिया बलिहारी ।।'

२—'झूलत चन्द्रप्रभाजू की लालो। परमाचार्य आदि रसिकन की वीरण वजावति दै कर ताली ।। श्री युगल-प्रिया की सर्वस सम्पति फरत मनोरथ वाली ।।

३—'अब मोहि चन्द्रकलाजू की आशा। जनकललीजू की मुख्य सहेली बिहरति सकल विलासा ।। चौरासी भव-फन्द छोड़ा के रसिकन संग दियो बासा। श्री युगल-प्रिया अब नहिं कछु संशय विपिन प्रमोद निवासा ।।'

४—जय श्रीचन्द्रकला अलबेली। अति सुकुमारि रूप गुरण आगरि नागरि गर्व गहेली ।। निमि-कुल प्रगटि संग-सिय प्यारी प्रियकारी रसकेली। चन्द्र-प्रभाजू की सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली। काञ्चन बन कमला प्रमोद वन लीला लहरि रिझेली ।। मोहनि यन्त्र वीरण स्वर टेरति प्रीतम-चित्त विथैली। शरणागत पालिनि रसमा-लिनि चालिनि गज गति हेली। श्री युगल-प्रिया अनुराग सदा सम्बन्ध राग की मेली ।।

(१३) स्वामी श्री युगलानन्यशरणजी महाराज की वाणी :--

१—"जय श्रीचन्द्रकला सुखखानी। प्रगटी प्रेमा परम

पावनी मूरत छबि गुन खानी ।। माधव मास मंजु मंगल मय मोद प्रमोद सुछानी ।। रसिक वर्य्य रसराज आर्य पर रहसाचार्य प्रधानी । योगयुक्ति युगवति जन जियकी जीवन 'युग्म' सुजानी ।।"

२—"चन्द्रकला सब बिधि सुखकारी । श्री सम्पन्न सीम सौन्दर्या सकल भाँति सौभाग्य सवाँरी ।। 'परमाचार्य पूज्यता त्रिभुवन अग्रगण्य अलियन सरदारी । सिय तद्रूप सरूप सलोनी छवि गुण खानि अनूप उदारी ।। रहसज्ञा रसदा रस सागरि रमवति रसिया राम बिहारी । चन्द्रभानु कुल कुमुद प्रफुल्लित चन्द्रप्रभा भव भव उजियारी ।। विगत कलंक मयंक दिव्य द्युति सुख उमड़ात निशंक निहारी । युगन २ जियो जनक-दुलारी 'युग्म' सजीवन प्राण पियारी ।।

३—जानकी लघु भगिनि सुन्दर सर्व शक्ति सिरो-मणी । रूप छवि लावण्य सुखमा अग्रगण्या गुन गनी ।। परतम परेस रसेश परब्रह्म सुख संदोहनी । कलकेलि रस सम्पन्न सियराम मनकी मोहनी ।। माधव सुचौदस पावनी सित पत्र प्रिय मन भावनी ।। चन्द्रकला-भिराम नामा भक्ति रसमय दायिनी । सदके गई दिल-रुवा पर मुख माह वाली अली । अह्लाद जीवन 'युग्म' की जिय मानिन्द कुमुदिनि कली ।।

४-जय श्रीचन्द्रकला सुकुमारी । श्रीमिथिलापति प्राण पियारी ।। साहबजादी शहन्शाह की चन्द्रभानु सुखकारी चन्द्रप्रभा की कोख जुड़ावन शशि सम प्रभा पसारी । पुर परिवार प्रजागण कुमुदिनि हृदय फुलावन हारी ।। रहस अगार शृङ्गार कोष की कुन्जी खोलन वारी । मधुर केलि दम्पति छबि सम्पति "हेमलता" अधिकारी ।।

(१४) स्वामी श्री जानकीवरशरणजी महाराज की वाणी :-

(किले में प्राचीन लेख रक्खा है)

१—चन्द्रकला गुण ज्ञान निराली । जनक लली की अली शिरोमणि प्रीति सु रीति सदा प्रतिपाली ।।...... सोइअह्लादिनि रूप प्रगटानी चन्द्रभानु घर वर खुशहाली । 'जानकी वर' अनुराग भागकी 'प्रीतिलता' विकसी वर लाली ।।

२—"जय श्री चन्द्रकला ठकुरानी । परमैश्वर्या वैधी विज्ञा रागानुगा प्रधानी ।। सिय अनुजा प्रिय अग्र गामिनी स्वामिनि रुख पहिचानी । मधुरकेलि मुग्धन मन मोदक मधुरी छवि अरुझानी ।। सुर-पादप प्रिय पाय प्रमोदक "प्रीति लता" लपटानी ।।"

(१५) स्वामी श्रीरामवल्लभाशरणजी की वाणी :—

(श्री युगल-बिहार पदावली से)

१—"श्री चन्द्रप्रभा की मनोरथ बेली ।

...... अमित सखी श्री सिय स्वामिनि की तिनमें मुख्य सहेली ।। इनकी कृपा होइहहिं जिन पर सिय-पिय ताहि हथेली । युगल-विहारिनि युगल-विहारी मिलि निशि वासर होइहहिं केली ।।"

२—आज जनम श्री चन्द्रकला को । परमाचार्य सकल 'यूथेश्वरि' प्रिया-प्रीतम विहार कुशला को ।। श्री-स्वामिनि सिय-छठी दिवस मधि मङ्गलनिधि उमड़यो मिथिला को ।।...

......युगलविहार अपार बिहारिनि चन्द्रकला-लली अवधलला को ।।

(१६) पण्डित शिरोमणि स्वामी श्री रामबल्लभा शरण जी (श्रीजानकी घाट) महाराज की वाणी :—

(कौशल खण्ड के मंगलाचरण में)

१—"जयति शक्ति सर्वेश्वरी, चन्द्रकला गुन खानि ।
दायिनि प्रेम प्रसाद की, रङ्क जिवावनि वानि ।।

२—सखिन शिरोमणि चन्द्रकले, तोहि विनवौं करजोर।
रसमय बुद्धि देहु मोहि, वरणौं रहस हलोर ।।
(श्रीचन्द्रकला जयन्ती व्रत-कथा)

"श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल से :-

मूल—अग्र स्वामि श्री अग्रसहचरी जनक–लली की।
पुष्प-वाटिका मिलन हेतु प्रिय भाँति भली की ।।
चन्द्रकला वर नाम श्याम सिय बश करि राखी।
प्रगटि स्वामि पद लही ध्यान रस मन मन चाखी ।।

मूल—बन प्रमोद महली प्रिया मिथिला कुञ्ज उपासिनी। श्री विमला अरु चन्द्रकला श्री चारुशील अलि चन्द्रवती, चन्द्रादि और शीला सुशीला भलि ।। कमला कमल मुखी अनूप बिशदा सुखदानी ।। पद्मा पद्मिनि चम्पकली रति वर्द्धनि मानी ।। प्रिय केलि कलाबिद पण्डिता जनक-कुवँरि सहवासिनो ।।"

टीका—आता चारि मूल में विदित ग्रन्थकार कहे और निमिबंशी अष्टभ्राता सुखदानी हैं। वात्सल्य भावं में मगन उन्मत्त सबै जिनके निहारे जग-वासना हिरानी हैं।। तिनहू के भवन चारुशीला चन्द्रकला आदि सियाजू की मुख्य सहचरी प्रगटानी हैं ।।

श्री युगल प्रियाजी कृत 'शृङ्गार रस रहस्य दीपिका' से :—

चाचा श्री मिथिलेश के, नृपवर सुव्रत राव।
भक्ति भाव गुण आगरी, रानी भावा नाव ॥
पुत्र प्रवर तिनके भये, अविरल रति को धाम।
चन्द्रभानु तिय सुन्दरी, चन्द्रप्रभा जेहि नाम।…
…जेहि दिन छठी लली की, भली भई उत्साह।
तेहि दिन चन्द्रकला कुवँरि, प्रगटी उत्सव माह ॥
'याज्ञवल्क्य बोले बिहँसि, सत्य गिरा निरधार।
षष्ट अष्ट षोड़स सखी, दल प्रति सेवत ताहि ॥
षष्टहि में यह मुख्य गनि, ताते षष्टी माँहि ॥

श्री सूर किशोरजी महाराज कृत 'श्रीमिथिला विलास में :—

पूरे ग्रन्थ में और किन्हीं सखी का नाम न देकर महाराज ने निमिबंश में प्रकाक्ट्य बतला कर सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी का ही नाम बार-बार लिया है :—

जनकलली मधुरे स्वर गावैं।
नई-नई तान सुनावै सहचरि' चन्द्रकला अलि वीन बजावै ॥
कोउ अलि मधुर मृदङ्ग बजावै, कोउ सखि रीझि-२ गुन गावै।

कोउ सखि रैनि दिवस सुधिभूली,
कोई सखि मुखपर भौर उड़ावैं ।
राज किशोरी विराजैं महल में,
बिन सखियन कोउ जान न पावैं ।।
'सूर-किशोर' बलैया लेहीं,
कोउ सखि व्याह की बात चलावैं ।।

श्री वावनजी महाराज (अलिविहारिणीजी) की वाणी :—

(श्री वैदेही वल्लभ रस कोष मंजूषा, पद नं०-३१७)

श्री कनक भवन मध्य प्रिया प्रीतम की छवि देखो ।
निरख-२ दोउ किशोर सुफल जन्म जग लेखो ।।
श्री चारुशीला मोरछल श्रीचन्द्रकला चवँर लिये ।
पानदान हेमा छेमा सुछत्र कर देखो ।।
इत्रदान लक्ष्मणाजू मणिन जटित कर लीन्हें,
पद्मगंधा पंखाकर सुभगा दर्पण देखो ।।

... ...

नित विहार नित परिकर पास प्रिया प्रीतम के ।

पीकदान सेवा श्री अलि विहारिणी देखो ॥

इस तरह निमिवंश उजागरी सर्वेश्वरी श्रीचन्द्र-कलाजी के सर्व प्रधानत्व के प्रमाणों की भरमार है, लेकिन उलूक (उल्लू) के लिये दिन-दोपहर के प्रचण्ड मार्त्तण्ड के प्रकाश में भो अन्धकार ही अन्धकार है।

देखिये, श्रीरसिक अलीजी कृत 'श्रीसीताराम रस चन्द्रोदय' का।

❀ कवित्त ❀

सच्चिदानन्द ब्रह्म दाशरथी रामचन्द्र,
सागर में सेतु बान्ध्यो कीन्हों सुरकाज हैं।
सोई अवतार कलिकाल रामानन्द स्वामी,
कीन्हों भव सागर में सेतु भक्ति भ्राज हैं॥
तिनही के वंश सीताराम रस प्रगट हित,
'चन्द्रकलाजू को अवतार अग्रराज हैं।
अग्रजू के वंश अवतंश रसिका अवतार,
गायो रस ललित सिंगार सिरताज हैं॥

'सच्चिदानन्द ब्रह्म दाशरथी रामचन्द्र' के अवतार भगवान श्री रामानन्द स्वामी सकल जगदाचार्य हैं और श्री चन्द्रकताजू के अवतार श्री अग्रस्वामीजी महाराज रसिक परमाचार्य हैं। फिर अवतारी सर्वेश्वरी श्री-चन्द्रकलाजी के प्रचण्ड मार्त्तण्ड स्वरूप आचार्यत्त्व के दर्शन के लिये प्रकाश की आवश्यकता ही रह जाती है ?

'देखिय, रवि कि दीप कर लीन्हें।'

हाँ, उलूकों की बात भिन्न है।

सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी के अवतार श्री अग्र-स्वामीजी महाराज शृङ्गार-रस के विशेष आचार्य हैं। सब पूर्वाचार्यों ने इनको रसाचार्ष माना है और श्री नाभा स्वामीजी के अवतार (पेखि कलि घोर जीव मति अति थोर कृपा करिकै बहोर नाभा स्वामी अवतरे हैं)।

(रसिक प्रकाश भक्तमाल, पृष्ट–१)

श्री युगल-प्रियाजी महाराज ने तो इनको अपना परमाचार्य मान इनमें अपनी विशेष आस्था दिखाई है

जो इनकी पदावली से स्पष्ट है। जैसे "युगलप्रिया केहि भाँति मिलौं अब अग्रअली गति मोरी।" "युगलप्रिया अधिकार सदा जेहि अग्र स्वामि पद लागरी" (सदा से पूर्व सम्बन्ध सूचित करते हैं) "अग्र स्वामि पथ लह्यौ अमित सुख युगल-प्रिया बड़भाग" "रसिक-नरेश अग्र-स्वामि बलिहारी।" आदि। फिर समस्त रसिक कुल और विशेषकर श्री युगल-प्रिया परम्परा की अवतारी सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाजी के रसाचार्य होने में शंका का कहाँ अवकाश रह जाता है? वैसे अल्पज्ञता या जान-बूझ कर जबरदस्ती भ्रम फैलाने की तो बात ही भिन्न है। भगवान ही सद्बुद्धि दें कि यथार्थ-तत्त्व का बोध हो।

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
12419
अयोध्या
श्री ... दास ... सेवा ट्रस्ट

श्री चन्द्रकला तत्त्व परिचायक ग्रन्थ :—

१— श्री लोमश संहिता ।

२— श्री जानकी चरितामृत ।

३— श्री चन्द्रकला पतत्त्व प्रकाशिका ।

४— श्री चन्द्रकला तत्त्व दर्शन ।

५— श्री चन्द्रकला वैभव दिग्दर्शन ।

६— शिव संहिता ।

७— कौशल खण्ड ।

८— श्रीजानकी गीत । आदि ।

शुद्धि पत्र :-

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	३	ऐसा	ऐसी
५४	१५	सरच्चन्द्रमा	शरच्चन्द्रमा
६६	अन्तिम	कीजिए	की जिय
६६	१०	सुशीला	सुशील
१०३	३	श्रीचन्द्रकताजू	श्रीचन्द्रकलाजू
१०३	११	रसाचाषं	रसाचार्य